ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 31 मार्च 2019

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 31 मार्च 2019 से 06 अप्रैल 2019

चैत्र कृ. – 11 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 61, अंक 13, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. अमृतसर में महर्षि दयानन्द जयंती का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड, अमृतसर के प्रांगण में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी का जन्मदिवस बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रातःकालीन हवन का आयोजन किया गया। स्कूल के छात्रों और अध्यापकों के द्वारा उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए प्रेरणादायक कविताएँ और लेख पढ़े गए।

रीजनल ऑफिसर पंजाब ज़ोन ए डॉ. (श्रीमती) नीलम कामरा और स्कूल के मैनेजर डॉ. राजेश कुमार प्रि. डी.ए.वी. कॉलेज, हाथी गेट, अमृतसर ने इस अवसर

पर छात्रों को शुभाशीष दी और कहा कि हम सबको आर्य समाज के दस नियमों में बताए गए गुणों को हमेशा अपने जीवन में धारण करना चाहिए।

स्कूल की प्रधानाचार्या डॉ. (श्रीमती) नीरा शर्मा ने इस अवसर पर छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि दयानन्द जी एक महान दार्शनिक और समाज सुधारक थे। उन्होंने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि हमें चोरी, आलस्य, ईर्ष्या, हिंसा आदि दोषों को दूर करके एक सभ्य नागरिक बनना चाहिए।

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन फिरोज़पुर में योग शिविर का आयोजन

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन फिरोज़पुर छावनी में प्राचार्या डॉ. सीमा अरोड़ा की अध्यक्षता में पतंजलि योग पीठ द्वारा योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। प्राचार्या डॉ. सीमा अरोड़ा ने आगंतुकों का स्वागत पुष्प वृन्दों के साथ किया। योग प्रशिक्षण में महाविद्यालय के समस्त स्टाफ व अध्ययनरत् छात्राएँ उपस्थित थे। डॉ. गुरनाम सिंह ने ध्यान और योगाभ्यास करवाते हुए योग के महत्त्व को प्रतिपादित किया। श्रीमती शक्ति चोपड़ा ने योग के प्रति जानकारी देते हुए

कहा कि प्राणायाम एवं व्यायाम का अभ्यास शरद व हेमंत ऋतु में करना चाहिए। प्राचार्या डॉ. सीमा अरोड़ा ने बताया कि योग जोड़ अर्थात् संगठन को कहते हैं। शारीरिक गठन के साथ ही परिवार समाज व देश में संगठन का प्रयास करते हुए प्रगति की आधारशिला रखें। उन्होंने इस गौरवमय सफल आयोजन हेतु सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। अंत में सभी प्रशिक्षणार्थियों को स्मृति चिह्न भेंट किए गए। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ से किया गया।

ए.जी. डी.ए.वी. मॉडल टाउन में 'चरित्र-निर्माण-शिविर'

अरविंद गुप्ता डी.ए.वी. सेंटेनरी पब्लिक स्कूल, नॉर्थेक्स, मॉडल टाउन–III, दिल्ली एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के संयुक्त तत्त्वावधान में विद्यालय परिसर में कक्षा– VI-E एवं सातवीं के छात्रों के लिए चरित्र–निर्माण–शिविर का आयोजन उच्चस्तर पर किया गया। जिसमें विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती माला सूद, चेयरमैन डॉ. एस.आर. अरोड़ा जी, प्रबंधक श्री नानक चंद जी, मुख्यातिथि कविहृदय श्री अरुण जैमिनी जी कार्यक्रम में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाते हुए, छात्रों के चारित्रिक विकास हेतु अभिभावक एवं अध्यापक के कर्तव्यों को बहुत ही सरल व सरस तरीके से समझाया।

डॉ. एस. आर. अरोड़ा ने डी.ए.वी. की परम्परा एवं हवन के प्रभाव पर प्रकाश

डालते हुए छात्रों को सकारात्मक दिशा के लिए अभिप्रेरित किया। प्रशिक्षित छात्रों के द्वारा सामूहिक हवन करवाया गया, तथा टेड टॉक शो में बालकेन्द्रित समसामयिक समस्याओं पर अभिभवकों से साथ चर्चा, प्रदर्शनी आर्यसमाज के इतिहास में गुरु विरजानन्द, महर्षि दयानन्द और महात्मा हंसराज आदि महापुरुषों के विचारों को प्रदर्शित किया गया तथा विद्यार्थियों को महापुरुषों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अवगत कराने के लिए काव्यालि का भी आयोजन किया गया।

योग तथा हवन का आधुनिककाल में उपयोगिता, वैज्ञानिकता तथा जीवन से साथ तारतम्यता को प्रदर्शित किया गया। आयुर्वेद के माध्यम से छात्रों को अपने प्राचीन ऋषि परम्परा तथा उसके दुष्प्रभावाभाव से परिचय कराया गया। सभी छात्रों ने आतिथ्य स्वागत, डी ए वी गान, स्वागतगीत, नृत्य, योग, लघुनाटिका, कविता एवं स्वास्थ्य–चर्चा आदि के माध्यम से आयुष्मान, चरित्रवान, गुणवान, श्रद्धावान् एवं विद्यावान् होने का संकल्प लिया। साथ ही सम्पूर्ण कार्यक्रम में अभिभावकों की सहभागिता एवं प्रतिक्रियात्मकता छात्रों के उत्साह निरंतर संवर्धित करती रही, अंत में शांति पाठ तथा प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ७

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 31 मार्च 2019 से 01 अप्रैल 2019

बड़े-छोटे सबको नमः

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान् यदि शक्नवाम, मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः।।
ऋग् 1.27.13

ऋषिः **आजीगर्तिः शुनः शेषः।** देवता **विश्वेदेवाः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(महद् भ्यः नमः)** [ज्ञान और गुणों में] महानों को नमः **(अर्भकेभ्यः नमः)** छोटों को नमः, **(युवभ्यः नमः)** युवकों को नमः, **(आशिनेभ्यः नमः)** वयोवृद्धों को नमः। **(यदि शक्नवाम)** जहाँ तक [हम] समर्थ हों **(देवान्)** विद्वानों को **(यजाम)** सत्कृत करें। **(देवाः)** हे विद्वानों! **(ज्यायसः)** अपने से बड़े के **(शंसं)** स्तवन को [मैं] **(मा आवृक्षि)** न छोड़ूँ।

●मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे अन्यों के प्रति अभिवादन आदि उचित शिष्टाचार का पालन करना होता है। मैं भी बड़े छोटे सबको अभिवादन करता हूँ; कृत्रिम और दिखावटी नहीं, किन्तु अन्तर्मन से 'नमः' करता हूँ। 'नमः' का मूल अर्थ है झुकना। झुकना सिर से भी होता है, मन से भी। राजा, राज्याधिकारी, माता, पिता, गुरु, अतिथि, साधु, संन्यासी, शिशु, कुमार, विद्यार्थी, युवक, वृद्ध, स्वामी, सेवक प्रत्येक से मिलने पर हृदय में जो आदर, श्रद्धा, प्रेम, आशीर्वाद आदि के भाव उत्पन्न होते हैं, वे सब 'नमः' के अन्दर समाविष्ट हैं। अतः अभिवादन के लिए वैदिक 'नमस्ते' शब्द अत्यन्त हृदय-ग्राही और उपयुक्त है। जब छोटे बड़े को 'नमस्ते' कहने में पारस्परिक सौहार्द और एक-दूसरे की उन्नति की कामना व्यक्त होती है। साथ ही 'नमः' में केवल शुभकामना ही नहीं, प्रत्युत बड़े-छोटे सबके प्रति कर्तव्य-पालन का भाव भी निहित है।

हे राष्ट्र के विद्यावृद्ध और गुणवृद्ध महान् नर-नारियों! हे उपदेशामृत-वर्षा से जनता को तृप्त करनेवाले वीतराग संन्यासियो! हे विद्वच्छिरोमणि तपोनिष्ठ वानप्रस्थ आचार्यो! हे देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने को उद्यत महावीरों! हे जनता-जनार्दन की सेवा में तत्पर महापुरुषों! 'तुम्हें नमः'। हे निश्छल भावभंगियों और बाल-क्रीड़ाओं से मन को मुदित करने वाले अबोध शिशुओं! हे अल्पवयस्क कुमारो! हे गुरु के अधीन विद्याध्ययन में रत तपस्वी, व्रती ब्रह्मचारियों! तुम्हें 'नमः'। हे अपने संकल्प-बल से भूमि आकाश को झुका देनेवाले बली, साहसी, ओजस्वी, विजयी युवको! तुम्हें 'नमः'। हे परिपक्व, धीर, गम्भीर, अनुभवी, धन्य, वन्दनीय, वयोवृद्ध जनो! तुम्हें 'नमः'।

समस्त बालक, युवक, वृद्ध मेरे अर्चनीय देव हैं। जहाँ तक सम्भव होगा, मैं इन्हें स्नेह-सत्कार दूँगा, इनकी सेवा करूँगा। यह भी ध्यान रखूँगा। यह भी ध्यान रखूँगा कि जो मुझसे बड़े हैं, उनकी शंसना में, उनके उपकार के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन में मुझसे कोई त्रुटि न हो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

यज्ञ प्रसाद

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पूज्य महात्मा श्री आनन्द स्वामी सरस्वती जी महाराज ने अपने प्रवचन यज्ञ के सम्बन्ध में कहा प्रतिदिन प्रार्थना करें कि मुझे श्रद्धा, मेधा, यश, सन्तान, विद्या, पुष्टि, श्री, बल, तेज, आयु और आरोग्यता प्राप्त हो। हमारे देश में जो पुत्ररहित हैं वे पुत्रवान् हों और पुत्रोंवाले पौत्रों को प्राप्त करें। निर्धन धनवान् हों और सब 100 वर्ष तक जियें। हमारे भीतर दाता बढ़ें, वेदों का विस्तार हो और उत्तम सन्तान की वृद्धि हो। श्रद्धा हमारे से कभी दूर न हो और दूसरों को देने के लिए हमारे पास बहुत-कुछ हो। हमारे घरों में बहुत अन्न हो। हम अतिथियों का लाभ उठानेवाले हों। धर्म-मार्ग पर चलने का यज्ञ ही सुकृत मार्ग का साधन है।

जो यजमान इन उत्तप्त और प्रदीप्त अग्नि-ज्वालाओं में नियमित रूप से आहुतियाँ देता रहता है, उसे सूर्य की रश्मियाँ दिव्य-लोक में ले जाती हैं, अर्थात् वह अपने आत्मा में दिव्य आनन्द की अनुभूति करता है।

अब आगे ....

यज्ञ-याग से ब्रह्मदर्शन

उपनिषद् में पाँचवें प्रश्न का उत्तर देते हुए पिप्पलाद ऋषि ने बड़ी महत्त्वपूर्ण शिक्षा दी है। वे कहते हैं कि "जो व्यक्ति यज्ञ-यागादि कहते हैं, वे ही ब्रह्म के उपासक हैं और विद्वान् योगीजन ओंकार-सहित यज्ञ-याग करते हुए ब्रह्मदर्शन कर पाते हैं।"

प्रश्न उपनिषद् में 'मंत्र और कर्म'

इसी प्रकरण में सुकेशा ब्रह्मचारी का छठा प्रश्न था कि "सोलह कलाओं वाला पुरुष कहाँ है?" पिप्पलाद ऋषि ने इसके उत्तर में जिन 16 कलाओं का वर्णन किया है, उनमें तप से 'मन्त्र और कर्म' इन 13वीं और 14वीं कला का वर्णन किया है। यह 'मन्त्र और कर्म' क्या है? यज्ञ में बोले जाने वाले मन्त्रों को ही यहाँ 'मन्त्र' और यज्ञ को सफल व पूर्ण बनानेवाली विविध प्रक्रियाओं को ही 'कर्म' नाम से कहा गया है। यज्ञ एक ऐसा कार्य है, जिसमें पोषक विविध और विभिन्न क्रियाएँ करनी आवश्यक होती है। इन सब क्रियाओं का समावेश अग्न्याधान से लेकर पूर्णाहुति तक होता है। प्रत्येक क्रिया मानव-जीवन को उच्च, पवित्र और मंगलमय बनाने के लिए प्रेरणाप्रद होती है। यज्ञ में जहाँ वेद-मन्त्र मानसिक शुद्धि और आर्थिक पवित्रता में मानव को प्रेरणा और स्फूर्ति देनेवाले होते हैं, वहाँ यज्ञ-सम्बन्धी कर्म अर्थात् याज्ञिक प्रक्रियाएँ मानव-हृदय में संयम, जीवन में अनुशासन और व्यवहार में शुचिता की सन्देशवाहक होती हैं।

यज्ञकुण्ड से शिक्षा

उदाहरण के लिए, यज्ञ-वेदी पर प्रस्तुत सब वस्तुओं पर एक दृष्टि डालिए। आप देखेंगे कि वहाँ उपस्थित प्रत्येक वस्तु सार्थक, सोद्देश्य और शिक्षाप्रद है; कोई भी चीज निरर्थक और परिहार्य नहीं है। पहले यज्ञ-कुण्ड को ही लें। यह नीचे से छोटा और क्रमशः विस्तृत होता हुआ ऊपर बड़े आकार का हो जाता है, अर्थात् समचौरस चौकोन, नीचे यदि एक हाथ तो ऊपर चार हाथ। मानव के लिए यह कुण्ड क्या अनुपम शिक्षा देता है? एक शब्द में विनम्रता की, धीमे-धीमे ऊँचा उठने की और किसी भी कार्य को अल्परूप में प्रारम्भ करके क्रमशः अधिक विशाल और विस्तृत करने की। क्या हम प्रकृति में इन नियम और व्यवस्था का मूर्त्त रूप नहीं देखते हैं? वट सदृश महान् विशालकाय वृक्ष, पहले चने के दाने जितना अत्यन्त लघु रूप में होता है। इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है जहाँ कोई सत्कार्य अत्यन्त स्वल्प रूप में प्रारम्भ किया गया और हवनकुण्ड के सदृश वह धीरे-धीरे बढ़ता विशाल रूप में परिणत हो गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने, जब वे महात्मा मुन्शीराम थे, हरिद्वार के गंगा-पार लगभग 7 मील दूर घने जंगल में 7 ब्रह्मचारियों के साथ आज से लगभग पौन सदी पहले गुरुकुल की स्थापना की थी। वही आज विशाल विश्वविद्यालय का रूप धारण किये हुए हैं। हवन-कुण्ड की यह शिक्षा निराश और निरुत्साही व्यक्ति को आशा और उत्साह की प्रेरणा देनेवाली है।

समिधा से कष्टसहन-शक्ति की प्रेरणा

यज्ञ में दूसरी वस्तु समिधा है। यह सूखी और महर्षि दयानन्द के शब्दों में, "वेदी के प्रमाणे छोटी-बड़ी कटवा लें। परन्तु ये समिधा कीड़ा लगी, मलिन देशोत्पन्न और अपवित्र पदार्थ आदि से दूषित न हों, अच्छे प्रकार देख लें और चारों ओर बराबर और बीच में चुन लें।" समिधा "पलाश, शमी, पीपल, बड़, गूलर, आम, बिल्व आदि" की हों। 'समिधा' शब्द का अर्थ ही यह है कि जिसके द्वारा अग्नि सम्यक् प्रकार से प्रज्ज्वलित हो सके।

'समिधा' कैसे तैयार होती है? वृक्ष

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

यज्ञ रूप प्रभु हमारे

● भद्रसेन

आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर के साप्ताहिक सत्संग में अपने प्राचार्य, प्राध्यापकों के साथ पर्याप्त संख्या में छात्र–छात्रायें आई हुई थीं। इन नवागन्तुक को देखकर सन्ध्या, ईश्वर स्तुति–प्रार्थना उपासना और स्वस्तिवाचन के मन्त्र पाठ के पश्चात् आचमन से पूर्व मैंने कहा – देखिये! हमने मिलकर पहले सन्ध्या की, जिसका एक सीधा–सा अर्थ है– अच्छी तरह से ध्यान करना, प्रभु से जुड़ना। उसके बाद के मन्त्रों में ईश्वर का वर्णन, स्वरूप समझाया, उससे प्रार्थनायें और उसकी भक्ति की बात थी। आगे स्वस्तिवाचन में स्वस्ति शब्द वाले मन्त्र बोले गए। स्वस्ति का अर्थ है = कल्याण, भला, अच्छा अर्थात् सु = अच्छी, अस्ति = स्थिति। हर स्थान, समय आयु का व्यक्ति अपना भला ही चाहता है। वह चाहना किस–किस रूप में होती है? किस–किस से कैसे होती है? यह सारा चित्रण इन मन्त्रों में आया है। अब आचमन = जल का पान होगा, यतो हि हम धार्मिक कर्म कर रहे हैं, हर ऐसा कर्म पवित्र भावना से पवित्र होकर किया जाता है। हमारे व्यवहार में पवित्रता का साधान रूप सबसे सुलभ जल है। अतः पवित्रता की प्रेरणा लेने के लिए हम आचमन करते हैं और इससे आगे अग्नि जलाकर उसमें समिधा, घृत, हवन सामग्री की क्रमशः आहुतियाँ देंगे। जैसे आजकल हम कभी अंगारों पर भून कर शक्करकन्दी खाते हैं, और कभी जल में उबालकर और कभी रेत में भुनी हुई खाते हैं और किसी मौसम में ऐसे ही छलियाँ = मक्की के भुट्टे खाते हैं। इनका अपना–अपना स्वाद अलग–अलग होता है, क्योंकि अग्नि से सम्पर्क अलग–अलग ढंग से होता है। ऐसे ही यज्ञ–हवन में आहुति रूप में दिए गए रोगनाशक – सुगन्धि प्रसारक – पौष्टिक – मिष्ट पदार्थों को अग्नि सूक्ष्म बनाकर वायु में फैला देती है। अतः इससे जल–वायु आदि की शुद्धि होती है। वैसे इसका सबसे अच्छा उदाहरण दाल या सब्जी में दिया जाने वाला छौंक है, जिससे स्वाद, रूप, गुण में कितना अन्तर आ जाता है। यह हम प्रतिदिन अनुभव करते हैं।

यज्ञ और यज्ञ प्रार्थना के पश्चात् सभी आगन्तुक यज्ञशाला से हॉल में आकर बैठ गए। तब सर्वप्रथम प्रभुभक्ति का एक मधुर भजन हुआ। आर्यसमाज विक्रमपुरा के मन्त्री श्री इन्द्रजीत जी तलवाड़ ने आगामी कार्यक्रम बताने से पूर्व कहा – आज डी.ए.वी. इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र–छात्रायें अपने प्राध्यापकों और प्राचार्य कोछड़ जी के साथ यहाँ सत्संग हॉल में विराजमान हैं। मैं आर्यसमाज की ओर से आप सभी का स्वागत, अभिनन्दन करता हूँ। आप सब अनेक बार भगवान के घर कहलाने वाले धर्मस्थलों पर जाते रहते हैं। कहीं किसी प्रकार के रूप, आकार के प्रतिष्ठित देव को देखते हैं और कहीं किसी और प्रकार के। मेरी तरह आप भी साईंस से जुड़े हुए विद्यार्थी हैं। विज्ञान वाले जब किसी वस्तु को देखते हैं, तो उसको गहराई से समझने का यत्न करते हैं। ऐसी स्थिति में कई बार अनेक प्रश्न भी उभरते हैं। वैसी ही इस समय मेरी कुछ स्थिति है, हो सकता है आपके मन में भी यह बात उठती हो, क्योंकि यज्ञ के अन्तिम भाग में गाया जा रहा था – यज्ञ रूप प्रभु हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए। क्या जो अभी यज्ञ किया गया, उसी रूप वाला, वैसा ही हमारा प्रभु है? जैसा कि गाया जा रहा था? हाँ, यह ध्यान रहे कि यज्ञ प्रक्रिया से साईंस के नियम के अनुसार ऐसे–ऐसे परिवर्तित–परिणत होते हुए सुगन्धी होती है, फैलती है। अत एव यज्ञ को जल–वायु आदि पदार्थों का शोधक भी कहा जाता है। अब आपके सामने होशियारपुर से आए श्री भद्रसेन जी अपने विचार रखेंगे। जो कि वेदों और दर्शनों के आचार्य हैं। उनसे निवेदन है, कि हो सके तो उभारे गए प्रश्न – यज्ञ रूप प्रभु – पर प्रकाश डालने की भी कृपा करेंगे।

ओ–३–म् की लम्बी ध्वनि को गुंजाने के पश्चात् प्रवक्ता ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा – मान्या महिलाओ! और श्रेद्धय सज्जनो! आप सबका यहाँ आने पर अभिनन्दन और स्वागत है। आइए! इस उभारे गए प्रश्न पर गहरे पानी पैठ कर कुछ विचार करें। यहाँ सबसे पहले यह ध्यान देने वाली बात है, कि प्रश्न में उभरा शब्द वेद से आया है। वैसे भी यहाँ सारा यज्ञ का कार्यक्रम वेद के मन्त्रों से ही हुआ है, अतः पहले वेद पर कुछ विचार करते हैं।

वेद विचार – वेद का अर्थ है = ज्ञान, समझ और हमारा हर कार्य, व्यवहार ज्ञान से ही हो सकता है, होता है। यन्त्र, मशीनरी का प्रयोग ज्ञान के बिना बिल्कुल भी नहीं हो सकता। हाँ, पशु, पक्षी तो अपने जन्म के साथ ही ज़रूरत का स्वाभाविक ज्ञान लेकर आते हैं, जैसे कि तैरने का। पर हम मनुष्य ऐसा ज्ञान लेकर नहीं आते। किसी न किसी निमित्त = सहयोगी के सहयोग से हमें ज्ञान आता है। जिसको हम गुरु, शिक्षक, टीचर आदि कहते हैं। अतः मनुष्यों का ज्ञान, समझ नैमित्तिक (निमित्त = सहायक से होने वाला) है।

ज्ञान का प्रादुर्भाव – आर्य समाज तथा सारे भारतीय शास्त्रों की यह दृढ़ धारणा है, कि सृष्टि के शुरु में जब मनुष्य हुए, तब उनको ज़रूरत का ज्ञान देने वाला केवल और केवल ईश्वर ही था। तभी तो योगदर्शनकार ने कहा है – (**स एषः) पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्** 1,26 अर्थात् नित्य ईश्वर ही सर्गारम्भ में ज्ञान का दाता गुरु था। ईश्वर का दिया वह ज्ञान वेद ही है। अतः इस दुनिया और वेद इन दोनों का कर्ता एक ही है, तभी तो इन दोनों में एकरूपता मिलती है। जैसे भूगोल तथा भूगोल पुस्तक में एक सा होना सचाई की पहचान है। इसी दृष्टि से वेद ने कहा है – **देवस्य पश्य काव्यम्** – अथर्व. 10, 8, 32। तभी तो जैसा हम सूर्य को देखते हैं, वैसा ही वेद में उसका वर्णन है। इन वेदों में यज्ञ के करने का विधान है। उसी के अनुरूप ही थोड़ी देर पूर्व यज्ञ का एक रूप आपके सामने आया। वेदों में यज्ञ शब्द नाम पद और क्रियापद के रूप में सैकड़ों–सैकड़ों बार आता है और वहाँ यज्ञ का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

यज्ञ–शब्दार्थ – यज्ञ शब्द यज् धातु से बनता है। जो देवपूजा, संगतिकरण और दान इन तीन अर्थों वाली है। वैसे धातु का अर्थ है किसी को धारण करने वाला अर्थात् कच्चा माल, मैटर। जैसे हमारे बर्तन के पदार्थ किसी न किसी कच्चे माल से बनते हैं। उदाहरण के रूप में कच्चा माल रूपी लकड़ी आदि, जिस पेड़ आदि की जैसी होती है उससे बनने वाली चीज में भी वे ही गुण मिलते हैं। यही शब्दों की भी बात है, बोले जाने वाले शब्दों के बारे में शब्द–पारखी कहते हैं, कि यज्ञ – (यज्+न) शब्द अपनी यज् धातु के अनुसार कहीं तीनों, कहीं दो और कहीं किसी एक अर्थ को अवश्य धारण करता है। देवपूजा का भाव है – दिव्य, अनोखे, प्रकाश करने वाले की पूजा = आदर, मान, सत्कार, आज्ञा पालन करना। संगतिकरण = अपेक्षित का मिलान जैसे रसोई में बनने वाली चीज़ में अपेक्षित का मिलान करते हैं। दान= देना। अभी हमने जो यज्ञ किया, उसमें यजमान–यज्ञ कराने वाले पुरोहित, ब्रह्मा आदि को मान देता है। वहाँ यज्ञ के पात्र, समिधा (लकड़ियाँ), घृत, हवन सामग्री का संगतिकरण = संग्रह, मिलान होता है। तब समिधा, घृत, सामग्री की आहुति अग्नि में दी जाती है। इन अर्थों के लागू होने से इस किए गए कर्म को यज्ञ कहा गया और यह एक धार्मिक कर्म है।

हमारे दर्शनों में छठा दर्शन मीमांसा माना जाता है, जिसका अर्थ है – विचार, विश्लेषण, विवेचन करना। इसके प्रणेता जैमिनि मुनि हैं। इसका पहला सूत्र है – **अथातो धर्म जिज्ञासा** अर्थात् हम धर्म को जानना चाहते हैं अगले सूत्र में उत्तर दिया है, कि जो वेद कहे, वह भला करने वाला कर्म ही धर्म है। इस दर्शन के पहले अध्याय में वेद के स्वरूप का विचार है, और आगे फिर सारे में यज्ञ प्रक्रिया का विस्तृत चित्रण है अर्थात् मीमांसा के अनुसार वेद में सबसे अधिक यज्ञ का वर्णन है। ऐसा अन्य अनेक शास्त्र भी मानते हैं।

अतः सामान्यतः भलाई करने वाले कर्म का नाम यज्ञ है। तभी तो यह कहा जाता है – **'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'** शतपथ 1,7,1,5। जैसे यह यज्ञ सुगन्धि से सब का भला करता है। बहुत जगह लंगर के लिए जग शब्द चलता है। विशेषतः गाँवों तथा पहाड़ों में जग शब्द बोला जाता है।

चारों वेदों में से दूसरे यजुर्वेद के नाम में भी यज् धातु का अंश है और इस वेद में सबसे अधिक यज्ञ का विस्तृत रूप मिलता है। ऋग् – यजुः – अथर्व में पुरुष सूक्त। अध्याय वाले मन्त्र हैं। वहाँ सृष्टि प्रक्रिया को यज्ञ नाम दिया गया है। तभी तो वहाँ आया है – **यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोअस्यासीदाज्यम्** – ऋ. 10,90,6 या 31,14 जैसे भोजन के पकवान आदि में घृत रूप, स्वाद, गुण देता है, ऐसे ही जगत् रचना में वसन्त ऋतु घी की तरह योगदान देती है। तभी तो इसी ऋतु में फूल, फल आदि अधिक होते हैं। सृष्टि प्रक्रिया के यज्ञ नाम की दृष्टि से ही – **इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा** अथर्व 2,35,5 मन्त्र में चित्रण है कि विश्वकर्मा ने इस यज्ञ को रचा है और तभी तो यह कहा जा रहा है – **'इयं समित् पृथ्वी द्यौर्द्वितीया'** – (अ. 11,5,4) अर्थात् इस सृष्टि यज्ञ की पहली समिधा पृथ्वी है और द्युलोक दूसरी – आदि।

यज्ञ का विविधात्मक स्वारस्य यजुर्वेद के 18वें अध्याय के पहले मन्त्र से 29 मन्त्र तक प्राप्त होता है। वहाँ सभी मन्त्रों में – यज्ञेन कल्पन्ताम् की टेक है। इनमें यज्ञ शब्द तृतीया = साधन, करण, औजार, इन्स्ट्रूमैण्ट, सहायक, साधक होने वाले के रूप में आया है अर्थात् जिसके द्वारा कुछ हो। कल्पन्ताम् का अर्थ है – किसी को शक्तिशाली बनाना, तरोताजा करना, क्योंकि यह क्लृपू सामर्थ्य धातु से सिद्ध होता है। जैसे दूध, दही, फल आदि से जब किसी का कायाकल्प करते हैं तो वह उस ढंग से पहले की अपेक्षा सशक्त, सक्षम हो जाता है। इन 29 मन्त्रों में यज्ञ शब्द के महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ईश्वर, धर्म,

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

महाभारत में पर्यावरण–संरक्षण

● श्रीमती डॉ. माया त्रिपाठी

संस्कृत वाङ्मय की विशालता, महाभारत का माहात्म्य एवं गीता की यथार्थता सर्वविदित है। श्रेय–प्रेय का ऐसा कोई स्वरूप तथा ऐसा कोई चिन्तनीय तत्त्व नहीं है, जिसका चिन्तन व्यास जी के द्वारा न हुआ हो। बुद्धि एवं हृदय दोनों की आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं का जैसा मंजुल चित्रण महाभारत में है वैसा अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता। स्वयं महाभारत के प्रारंभ में ही इस संबंध में व्यास जी ने कहा है कि 'इसमें (महाभारत में) जो कुछ निहित है, वही अन्यत्र है और इसमें जो कुछ नहीं है, वह अन्यत्र भी नहीं है।'

भारतीय संस्कृति में प्रकृति और पर्यावरण की अर्चना एवं आराधना की पुण्यभावना सन्निहित है। पर्यावरण प्रकृति पर पूर्ण रूप से निर्भर है। प्रकृति का प्रत्येक कार्य एक स्वाभाविक एवं नियमित प्रणाली का श्रेष्ठ रूप है। इस प्रकृति को विकृत करने का परिणाम ब्रह्माण्ड की परमसत्ता को चुनौती देना है। भारतीय चिन्तन में पर्यावरण–संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है, जितना मानव जाति का इतिहास। **'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः'** वसुन्धरा जननी है, हम सब उसके पुत्र हैं, अथर्ववेद के भूमिसूक्त के द्रष्टा वैदिक ऋषि ने सहस्रों वर्षों पूर्व उद्घोषित किया था। मनुष्य ही नहीं, हमारे पर्यावरण का हर चर–अचर जीव–जन्तु प्रकृति–चेतना से इस प्रकार जुड़ा है कि बिना पर्यावरणीय सुन्तुलन के जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इस प्रकार **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** की पौराणिक आस्था ही परिलक्षित होती है। अथर्ववेद के काण्ड – 4 सूक्त 3 के प्रथम मंत्र में बताया गया है कि– "प्रकृति की जीव–सृष्टि का विनाश करने वाले व्याघ्र, चोर और भेड़ियों से हमारी रक्षा हो, वन्य प्रदेश, झरनों एवं वायु को प्रदूषित करने वालों से हम सुरक्षित रहें।" बृहदारण्यकोपनिषद् के अध्याय–3, मंत्र–28 में तो मनुष्य और वृक्ष के विभिन्न अंगों की तुलना की गई है।

पर्यावरण–संरक्षण के सन्दर्भ में उन्नीसवीं एवं बीसवीं सदी के चार्ल्स डार्विन, जगदीश चन्द्र वसु एंव राउल फ्रांस जैसे *विश्वविख्यात* अनुसंधानकर्ताओं ने वनस्पति एवं प्राणिजगत् का गहन अध्ययन करके जो जानकारियाँ प्राप्त की थीं, वे सभी जानकारियाँ ऋषि–मुनियों को प्राचीन काल में ही प्राप्त थी। वैदिक कालीन ऋषि पेड़–पौधों में देवत्व की भावना प्रतिष्ठित करके पर्यावरण–संरक्षण हेतु सतत प्रयत्नशील थे।

वैदिक ऋषि प्रार्थना करते हैं, "पृथ्वी, जल, ओषधि एवं वनस्पतियाँ हमारे लिए शुभ एवं लाभप्रद हों।" इनके अभाव में मानव जीवन की सुख–शांति की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। महाभारत में मानव और उसके पर्यावरण के अन्योन्याश्रित संबंध का वर्णन किया गया है। समस्त पर्यावरण में एक ही परमात्मा समान रूप से व्याप्त है। सभी प्राणी उसी से अनुप्राणित हैं। गीता के सातवें अध्याय में भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं–

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु।।
पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु।।

महाभारत भीषमपर्व, गीता 7.8,9

अर्थात् "हे अर्जुन! मैं जल में रस हूँ, चन्द्रमा और सूर्य में प्रकाश हूँ, सम्पूर्ण वेदों में ओंकार हूँ, आकाश में शब्द और पुरुषों में पुरुषत्व हूँ। मैं पृथ्वी में पवित्र गन्ध और अग्नि में तेज हूँ तथा सम्पूर्ण भूतों में उनका जीवन हूँ और तपस्वियों में तप हूँ।"

गीता के सातवें अध्याय में ही भगवान् श्रीकृष्ण अपने आपको सनातन बताते हुए कहते हैं–

"बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातन्।
बुद्धिबुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्।।
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मिन् भरतर्षभ।।

महाभारत भीष्मपर्व, गीता 7.10,11

अर्थात् ' हे अर्जुन! तू सम्पूर्ण भूतों का सनातन बीज मुझको ही जान। मैर बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज हूँ। मैं बलवानों का आसक्ति और कामनाओं से रहित बल अर्थात् सामर्थ्य हूँ और सब भूतों में धम्र के अनुकूल काम हूँ।

श्रीमद्भागवत के महानायक श्रीकृष्ण सर्वोत्कृष्ट पर्यावरणविद् हैं। वे अपनी व्रजलीलाओं के माध्यम से पञ्महाभूत, पञ्चतन्मात्राओं, कर्मशक्ति, महत् तत्त्व और त्रिविध अहंकार तत्त्व का संशोधन करते हैं। वे वृक्षों और वनस्पतियों के महत्व का निरूपण कृरते हुए अपने गोप सखाओं से कहते हैं– ये वृक्ष परोपकारी, अमितदानी, सहिष्णु, महाउदार और महाभाग्यशाली हैं। इन वृक्ष वनस्पतियों का जीवन धन्य है।

पश्यतैतान्महाभगान् परार्थैकान्तजीवितान्।
वातवर्षातपहिमान् सहन्तो वारयन्ति नः।।
अहो एषां वरं जन्म सर्वप्राण्युपजीवनम्।
सुजनस्येव येषां वै विमुखा यान्ति नार्थिनः।।
पत्र–पुष्पफलच्छाया–मूल–वल्कल–दारुभिः।
गन्धनिर्यास–भस्मास्थितोक्मैः कमान्
वितन्वते।।

भागवत् पुराण 10.22, 32–34

पर्यावरण का अर्थ उस वातावरण से लिया जाता है, जो हमारे चारों ओर फैला हुआ है। जिसका निर्माण धरातल, जलवायु, मिट्टी, हवा एवं पानी से हुआ है। इसी पर्यावरण द्वारा प्राकृतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिवेश बना है, जिससे मनुष्य विभिन्न क्षेत्रों में रहते हुए अपनी अलग संस्कृति एवं समाज का निर्माण करता है। वास्तव में पर्यावरण कोई अकेला तत्त्व नहीं है। अपितु यह अनेक तत्त्वों का समूह है। पर्यावरण अंग्रेज़ी के शब्द ENVIRONMENT (एनवायरमेंट) का अनुवाद है, जो दो शब्दों ENVIRON (एनवायरन) और MENT (मेन्ट) से मिल करके बना है। जिसका अर्थ है 'आवृत करना' है। शब्दिक दृष्टि से इसका अर्थ 'SURROUNDINGS' सराउन्डिंग्स है। जिसका तात्पर्य है 'चारों तरफ से घिरे हुए।' शब्दिक अर्थ को देखते हुए हमारे सामने तीन विचार आते हैं–

1. क्या घिरा हुआ है?
2. किसके द्वारा घिरा हुआ है?
3. कहाँ घिरा हुआ है?

उपर्युक्त तीनों प्रश्नों पर सूक्ष्मता से विचार करने पर प्रथम प्रश्न का समाधान है– सामान्य रूप से जीवित वस्तु या मनुष्य। "भौतिक गुण" जिससे मनुष्य घिरी हुई वस्तु है, यह दूसरे प्रश्न का समाधानस्वरूप उत्तर है। यहीं भौतिक गुण ही 'पर्यावरण' हो जाता है। तीसरा प्रश्न कहाँ घिरा है इसका उत्तर 'स्थान' हो जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि किसी स्थान–विशेष में मनुष्य के आसपास भौतिक वस्तुओं (जल मृदा) का आवरण जिसके द्वारा मनुष्य घिरा होता है, उसे ही 'पर्यावरण कहा जाता है।

महाभारत के अनुसार पर्यावरण सत्व, रजस् एवं तमस् गुणों से पूर्ण परमाणुओं का समूह है। जो वर्तमान में प्रोट्रान, इलेक्ट्रान एवं न्यूट्रान हैं। इस सम्बन्ध में श्रीकृष्ण कहते हैं–

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।।

महाभारत भीषापर्व गीता 14.5

अर्थात् हे अर्जुन! सत्त्वगुण,रजोगुण और तमोगुण ये प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुण अविनाशी जीवात्मा को शरीर में बाँधते हैं।"

वेदव्यासजी ने वैदिक परम्परा को स्थिर रखते हुए पंचतत्त्वों को महत्त्व को दृष्टिगत किया। शान्तिपर्व में कहा गया है।

वायुज्योतिरथाकाशमापोऽथ पृथिवी तथा।
शब्दाः स्पर्शश्च रूपं च रसा गन्धस्तथैव च।।

महाभारत शान्तिपर्व 302.25

अर्थात् आकाश, वायु तेज,जल और पृथ्वी ये पाँच महाभूत शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध ये पाँच विषय वैकृत सर्ग के अन्तर्गत हैं।

महाभारत काल में पृथ्वी की विधिवत् स्तुति की जाती थी। पृथ्वी की सुरक्षा एवं संरक्षण ज्ञानीजनों द्वारा किया गया है। लाक्षागृह से जीवित बच जाने पर जब पाण्डवों को पुन– खाण्डवप्रस्थ प्राप्त हुआ तो उन्होंनं सर्वप्रथम पृथ्वी की पूजा की।

पृथ्वी के उपभाग की बात श्रीकृष्ण ने धर्म–मर्यादा में रहते हुए कही है। अतिशय उपभाग अनुचित है। यदि मानव धर्म मार्ग का अनुसारण नहीं करता तो निश्चित रूप से धर्मच्युत माना जाएगा। युधिष्ठिर से कहते हैं– **"यथेष्टं पालय महीं सदा धर्मधुरं वह।**

पृथ्वी दान समस्त दानों में श्रेष्ठ है। भीष्मजी युधिष्ठिर से कहते हैं–

दोग्ध्री वासांसि रत्नानि पुशून् व्रीहियवांस्तथा।
भूमिदः सर्वभूतेषु शाश्वतीरेधते समाः ।।

महाभारत आदि पर्व 206.51

वेदों के ही समान महाभारत में पृथ्वी को माँ कहा गया है। भीष्म जी इस सम्बन्ध में कहते हैं।

"....... पावनं जननी यथा। "

महाभारत अनुशासनपर्व 62.3

इस प्रकार पृथ्वी के सम्बन्ध में अनेक आख्यान प्राप्त होते हैं। यदि हम सभी पृथ्वी को मातृवत् अर्चना करेंगे तो निश्चित रूप से यह हमको पुत्रवत् स्नेह प्रदान करेगी।

जल की पवित्रता का उल्लेख महाभारत में कई स्थलों पर है। नदी के जल में स्नान पवित्र कर्म बताया गया है। अनुशासन पर्व में अंगिरा मुनि जल के माहात्म्य को गौतम ऋषि से कहते हैं। समुद्र का स्वच्छन्द जल अपनी लहरें उठाकर वायु का अभिवादन स्वीकार करते हुए अपनी विनम्रता का उपदेश देता है। वर्षा के जल संरक्षण के अनेकविध उपाय इसमें वर्णित हैं। वर्षा का जल बावड़ी, कुएँ, तालाब आदि में संरक्षित होकर वर्षानतर जन–कल्याण के कार्य आएगां यह कार्य पुण्यतम है, इसका वर्णन अश्वमेघ पर्व में वर्णित है–

"तेषां वाप्यश्च कूपाश्च तटाकानि सरांसि च।
दीर्घिकाः पुष्करिण्यश्च सजलाश्च जलाशयाः।।

महाभारत अनुशासनपर्व 62.11

अश्वमेधिक पर्व में स्वयं वैशम्पायन जी ने जलदान के माहात्म्य को बताया है–

अद्भिः सर्वाणि भूतानि जीवन्ति प्रभवन्ति च।
तस्मात् सर्वेषु दानेषु तोयदानं विशिष्यते।।

महाभारत आश्वमेधिपर्व

अनुशासनपर्व में भीष्म ने युधिष्ठिर को जलाशय–निर्माण से धर्म, अर्थ, काम तीनों फल की प्राप्ति का उपदेश दिया है।

जल के समान वृक्षों को प्रति तत्कालीन समाज सचेष्ट था। स्वयं पाण्डवों का अधिक समय वचनों में ही व्यतीत हुआ। प्रदूषणविहीन वायु का प्रसंग अनेक स्थलों पर मिलता है। शुद्ध वायु के सेवन से मानसिक सन्तुलन स्थिर और विचार स्वस्थ होगा। अन्यथा प्रतिकूल प्रभाव पड़ने से समस्त मानवीय व्यवस्था प्रभावित होगी। अनुशासन पर्व में कहा गया है–

नाध्यापयेत् तथोच्छिष्टो नाधीयोत कदाचन।
बाते च पूतिगन्धे च मासापि न चिन्तयेत्।।

महा. 10.4.71

धार्मिक अनुष्ठानों में पीपल, बड़ आम के पल्लव, कमल, कुंद, आशोक, तुलसी आदि की पूजा–अर्चना लोकों के जीवन से अभिन्न रूप से जुड़ हुआ हम पाते हैं। यदि वातावरण स्वच्छ और सुन्दर बनाने में सभी का सहयोग निःस्वार्थभाव से रहेगा तो प्रदूषण की समस्या उत्पन्न ही नहीं होगी। भीष्म जी

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

पाथेय

● यशवर्मा

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।। ऋ.1/25/15

यह एक विशेष मन्त्र है, तभी तो अथर्ववेद, यजुर्वेद और सामवेद तीनों में हमारे परमपिता परमेश्वर ने हमारे मार्गदर्शन के लिए दिया है। इस विशेष मन्त्र का अर्थ इस प्रकार है :–

हे पापनिवारक देव, हमारे उत्तम–मध्यम व अधम बन्धन को ढीला कर दो। इन बन्धनों के टूटने से हम तेरे नियमों में रहते हुए पापरहित व बन्धन रहित होकर मुक्ति के योग्य हो जाएं।

अब प्रश्न यह उठता है कि उत्तम भी है और बन्धन भी है, यह कैसे हो सकता है। जैसे सोने के पिंजरे में पंछी हो, पिंजरा उत्तम है परन्तु बन्धन का कारण भी है। दान–दया–करुणा–सहायता कर्त्तव्य निभाना–ईमानदारी–सत्य–अहिंसा आदि सब अच्छे कार्य हैं परन्तु जब तक इनके साथ ऐषणा जुड़ी हुई है तब तक यह उत्तम बन्धन का कारण है। इसी प्रकार मध्यम बन्धन का कारण है जो हम सामान्य कार्य अच्छे व बुरे दोनों मिश्रित रूप में करते रहते हैं। अधम बन्धन का कारण वह है जो मोह, राग–द्वेष–ईर्ष्यावश दूसरों को दुःख देकर कर्म करते हैं।

मानव प्रायः अहंकार ग्रस्त रहता है। छोटी–छोटी बातों से, पदार्थों से अहंकार पाल लेता है। बाईस (22) प्रकार का नशा बताया गया है यानी बाईस चीज़ों से व्यक्ति में अहंकार आ जाता है जैसे बल, विद्या, वाकपटुता, सम्भाषण, पद, सुन्दरता, धन, रिश्ते–नाते, चाल–ढाल, कपड़े, कार–कोठी, बिज़नस, नेतागिरी, त्याग, सेवा, दान आदि। शराब व नशीले पदार्थों से तो होश ही नहीं रहता। इन सभी अहंकार के पदार्थों से मनुष्य को होश ही नहीं रहता, उसकी बॉडी भाषा ही बदल जाती है, उसका व्यवहार ही बदल जाता है और कई बार तो बड़े–छोटे की तमीज़ भूलकर दुर्व्यवहार कर बैठता है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रभु ने 24 घंटे का समय दिया है, चाहे कोई इसे सार्थक करके धनवान, बलवान, ज्ञानवान, महान् बन जाए अथवा इस मूल्यवान समय को व्यर्थ में गँवा दे। व्यक्ति के मस्तिष्क में प्रतिदिन लगभग 60000 विचार उठते हैं जिसमें से 90 प्रतिशत विचार पास्ट के बारे में होते हैं। हम वर्तमान में तो बहुत कम जीते हैं। हम सत्यम, शिवम, सुन्दरम के विचार उठाएँ। प्रभु के बनाए फूल को देखें, कितने सुन्दर हैं तो बनाने वाला कितना सुन्दर होगा। प्रभु के बनाए वेद कितने सत्य हैं तो वह प्रभु भी तो सत्य है। प्रभु स्वयं शिव अर्थात् कल्याण कारी हैं। अतः हम सत्यम, शिवम सुन्दरम को मस्तिष्क में रखें सदैव तो निश्चित ही हमारे अहंकार का नाश होगा और जैसा कि मन्त्र में आया है कि हम पापरहित व बन्धन रहित हो जाएँ तो मुक्ति का रास्ता प्रशस्त होगा।

मानव जीवन क्षणिक है, क्षण भँगुर है परन्तु है बहुत मूल्यवान क्योंकि केवल मनुष्य जन्म मिलने पर ही मुक्ति का रास्ता प्रशस्त होता है। परन्तु साथ ही यह भी नहीं पता कि कौन–सा श्वास अन्तिम श्वास हो। एक विनोद की बात है कि एक व्यक्ति अपने मित्र के घर गया और उसके घर वालों से पूछा कि मेरे मित्र की मृत्यु कैसे हुई। घर वालों से उत्तर मिला कि अन्तिम श्वास लिया और मर गए। वह व्यक्ति बोला मेरा मित्र न अन्तिम श्वास लेता न मरता। कब कौन–सा अन्तिम श्वास है यह किसी को पता नहीं होता। इसलिए हम अपने मूल्यवान जीवन को सफल बनाने के लिए यह देखें कि हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है और हम आज खड़े कहाँ पर हैं। जैसे हम किसी कॉलोनी में जाते हैं तो वहाँ पर नक्शा देखते है कि हम कहाँ खड़े है और जाना कहाँ है। फिर हम आसानी से उस कॉलोनी में लक्ष्य वाले घर तक पहुँच जाते हैं। हम प्रायः जीवन में शारीरिक आर्थिक, पारिवारिक उन्नति की ओर तो ध्यान देते हैं परन्तु आत्मा को तो भुला देते हैं। आत्मा के बारे में तो जीवन के लम्बे काल तक पता ही नहीं होता है। आत्मा क्या है, कहाँ है, क्या करती है। जब आत्मा का ही पता नहीं तो परम–आत्मा तो बहुत दूर की बात की बात है। जब इन दोनों का ही पता नहीं तो लक्ष्य का क्या पता है। जब लक्ष्य का पता ही नहीं तो वहाँ पहुँच ही नहीं सकते। सफलता पानी है तो लक्ष्य का निर्धारण करना होगा।

मानव जीवन का लक्ष्य पाने के लिए गलत विचार हटाने होंगे क्योंकि गलत विचार शक्ति तोड़ते हैं। अच्छे विचार लाने होंगे, ये शक्ति को जोड़ते हैं। हम प्रभु से प्रार्थना कुछ कर रहे होते हैं और सोच कुछ और रहे होते हैं। स्वास्थ्य की, धन की, कार्य बनने की प्रार्थना कर रहे होते हैं और सोच रहे होते हैं कहीं बीमार न हो जाऊँ, काम बनेगा या नहीं आदि। ऐसा इसलिए होता है कि ब्रह्माण्ड (यूनीवर्स) हमारी तरंगों को पकड़ लेता है चाहे नैगेटिव हो या पाज़ीटिव। इसलिए शुभ और उचित सोचना है जिससे संतुष्टि आएगी, लेकिन फिर भी अशुभ हो जाए तो उसमें भी कहीं न कहीं हमारा हित छिपा होता है जो हमें उस समय अच्छा नहीं लगता। जीवन की असफलताएँ/अहित बहुत बड़े सबक दे जाती हैं और बहुत बार फिर मानव ऊँचा उठ जाता है। सशक्त, सुदृढ़ बन जाता है।

हम अपनी ऊर्जा शक्ति निर्माण में लगाएँ, विध्वंस में नहीं। जवानी में जब मनुष्य को पास शक्ति होती है तब उसे होश नहीं होता। बुढ़ापे में शक्ति–विहीन हो जाता है परन्तु जीवन के तजुर्बे का होश उसके पास होता है। यदि जवानी के जोश और बुढ़ापे के होश का मेल हो जाए तो उत्थान ही उत्थान है। एक जूते बनाने वाला कारीगर था, जूते बनाता था। बूढ़ा हो गया, बेटा जवान हो गया। बेटा जूते बनाने लगा, पिता सलाह देता था। नित्य प्रति जूतों में बेहतर/इम्प्रूवमैन्ट की सलाह देता। अच्छे जूते बनते, खूब बिकते। दो वर्ष बीत गए, बेटे ने सोचा पिता जी तो ऐसे ही रोज़ सलाह देकर मेरा दिमाग खाते रहते हैं। पिता को कहा, अपनी सलाह अपने पास रखो। थोड़े दिन बाद उसके जूतों में जो निखार आता था पिता की बिना सलाह से, वह बन्द हो गया। धीरे–धीरे जूते बिकने कम होते चले गए। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक राष्ट्र की उन्नति के लिए डायरैक्शन की सदैव आवश्यकता रहती है। आगे बढ़ने की, उन्नति करने की सम्भावना सब में होती है और यह तभी सम्भव है जब अच्छा गुरु, कोच, गाईड, ऋषियों के अनुभव हमें मिल जाए। हमें सदा संकल्प व प्रेरणा की लगातार आवश्यकता रहती है अन्यथा व्यक्ति में ढीलापन आ जाता है, वह पथ भ्रष्ट भी हो जाता है और अपने लक्ष्य से भटक जाता है। आपने देखा होगा कुछ लोग वर्षों से लगातार नित्यप्रति सत्संग में जाते हैं, स्वाध्याय करते हैं, सैर करते हैं, कभी अपनी दिनचर्या में ऐसी चीज़ों का नागा नहीं करते क्योंकि उनका ऐसा संकल्प है। संकल्प में एक बहुत बड़ी शक्ति छिपी हुई है जो मनुष्य को अपना लक्ष्य उपलब्ध करवाने में सक्षम है। इसलिए हम अपने जीवन में अच्छी आदतें पाल लें। 21 दिन अभ्यास कर लें तो अच्छी आदत बन जाती है और 42 दिन के अभ्यास से बुरी आदत छूट जाती है। एक कथानक है कि एक चर्च के पादरी थे, उन्हें क्रोध बहुत आता था और क्रोध में गाली भी दे देते थे। जो विशय थे उन्होंने सोचा कि इस पादरी के कारण हमारे धर्म की बदनामी होती है। एक बहुत बड़ी कांफ्रैस रखी गई। उस बैठक में पादरी ने सबके सामने कसम ली कि मैं क्रोध नहीं करूँगा और न ही गाली दूँगा। बैठक के पश्चात् पार्टी थी। पार्टी में लोग खा–पी रहे हैं, इतने में एक बैरा सूप लेकर आया और वह सूप उस पादरी के सबसे बढ़िया सूट पर गिर गया। पादरी को मन में बहुत क्रोध आया परन्तु अभी कसम खाई थी अतः मुस्कराता रहा। लेकिन वहाँ सिक्योरिटी वाला आया तो उसे धीरे से कहता है कि इस बैरे को इतना मारना कि इसकी हड्डियाँ तोड़ दो और गाली भी खूब देना। तो यह जो हमें आदतें है, वह कभी एकदम से नहीं बन या दूर हो सकती, इनके लिए सतत प्रयासरत व जाग्रत रहना पड़ता है। ऊपर से नहीं हमारे अन्दर से बुरी आदत छूट जाए। जैसी हमारी आदतें बन जाती है, हम उन्हीं के वशीभूत होकर सदा कर्म करते रहते हैं। जैसे हम कर्म करते हैं वैसे ही हमारे संस्कार बन जाते हैं, जो हमारे अगले जन्मों तक साथ चलते हैं। एक कथानक है कि एक सेठ थे जिनके पास बहुत धन था। लोगों को उधार देते थे और एक ही बात पूछते थे कि वापिस इसी जन्म में दोगे या अगले जन्म में, ईमानदार लोग कहते इसी जन्म में और वापिस दे भी जाते। कुछ बेईमान लोग कहते अगले जन्म में और वह धन लौटाने न आते। सेठ जी उधर सबको देते। एक चोर ने सोचा मैं इस सेठ की तिजोरी ही क्यों न साफ कर दूँ। चोर गया सेठ जी के पास, सेठ जी मुझे एक लाख रुपए उधार दे दो। सेठ जी कहते हैं इस जन्म में लौटाओगे या अगले जन्म में, चोर कहता है अगले जन्म में। सेठ जी उसे एक लाख रुपए देते हैं। चोर उनके भैंसों के तबेले में इस आशय के साथ छिप जाता है कि रात्रि को सेठ की तिजोरी साफ कर दूँगा। रात्रि हो जाती है, तभी दो भैंसें आपस में बात करती हैं और एक भैंस दूसरी से पूछती है, तुम यहाँ कैसे आ गई। दूसरी उत्तर देती है कि मैंने कभी सेठ से उधार ली थी व कहा था अगले जन्म में वापिस करूँगी, फिर मैं मर गई व अब मैं भैंस बनकर 3 वर्ष से यहाँ बँधी हूँ और सेठ का कर्ज़ अदा कर रही हूँ। भैंस की बात सुनकर चोर घबराया, तिजोरी तो भूल गया, भोर होते ही सेठ के पास पहुँच गया और कहा, यह लो अपना एक लाख रुपया, मुझे भैंस नहीं बनना। सेठ उसकी भैंस वाली बात की समझ न पाया। इसलिए हम अपने जीवन में अच्छे कर्म कर लें जो संस्कार बनाएँगे और अगले जन्म में काम आएँगे वरना तो हमारा हाल भी उस सेठ की तरह होगा जिसे जम्मू से श्रीनगर जाना था। बात उस ज़माने की है जब मोटर–कार–बस आदि नहीं चलती थी। सेठ ने एक ताँगे वाले को बुलाया और कहा कि श्रीनगर चलना है, कितने पैसे लोगे। ताँगे वाला कहता है, सेठ जी, आपसे क्या पैसे लेने, बस घोड़े व ताँगे पर जो खर्चा आएगा, आप उतना ही दे देना। बस गुज़ारा हो जाएगा। सेठ ने सोचा यह तो सस्ता सौदा है, विचार करके कहा, परसों सुबह आ जाना, फिर चलेंगे। ताँगे वाला निश्चित दिन पर आ गया। दोनों चल पड़े जम्मू से श्रीनगर के लिए। पहला पड़ाव आया, रात्रि रुके, ताँगे वाला कहता है, सेठ जी ताँगे की गद्दियाँ पुरानी हैं, आपको दिक्कत होगी, कहो तो नई नरम सी गद्दियाँ बनवा दूँ। सेठ ने पैसे दिए और कहा लगवा लो। 2 दिन लग गए गद्दियाँ बदल गई। फिर चल

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

बल–प्रयोग का कोई बुरा असर जेल में प्रकट नहीं हुआ

● स्व. श्री बलराज भल्ला

इस विश्वयुद्ध का जेल – निवासियों पर क्या असर हुआ, इस संबन्ध में दो–चार शब्द कहे बिना मैं इस परिच्छेद को बन्द नहीं कर सकता। 1914 के अंत और 1915 के आरम्भ तक कैदियों का ध्यान इस ओर आकर्षित नहीं हुआ। सन् 1915 में झंग और मुजफ्फरगढ़ की बगावत ने, पब्लिक की लगातार शोर करने वाली 'वे आये, वे आये' की आवाज़ ने, सिक्खों की साजिश में सजा पाये हुए मुल्ज़िमों की आमद ने, आम कैदियों को बेदार (चौकन्ना) कर दिया। जर्मन का नाम हर एक के मुँह से सुन पड़ने लगा। यहाँ तक कि मुसलमान कैदी विश्वास करते थे कि कैसर मुसलमान हो गया है और वह ईद नमाज़ देहली में पढ़ेगा। एक बार हिसार के एक हिन्दू ने, जो नमाज के नाम से वाकिफ प्रतीत होता था, मुझे पूछा 'क्या कैसर सचमुच ही नमाजी हो गया है?' मुझे उसकी बात सुन कर विचार आया, यह जगत् क्या अद्भुत है, हर एक आदमी जबरदस्त को भाई बनाना चाहता है। ईद के बाद ईद गुज़रने लगी और साधारण कैदियों का स्वप्न भी भंग होने लगा। इन लोगों की अंग्रेजी–राज्य नष्ट करने की इच्छा किसी देश–भक्ति के भाव अथवा जर्मन–प्रेम पर स्थित थी, यह कहना बिलकुल गलत है। ये लोग तो अपनी आज़ादी चाहते थे, चाहे उन्हें किसी तरह से ही मिल जाये। 1917 के अंत में या 1918 के शुरू में जेलखानों के अन्दर 'लेबर फ़ोर्स' के लिए रिक्रूटिंग शुरू हुई। पहले–पहल तो कुछ कैदी बड़े उत्साह से आगे बढ़े, परन्तु थोड़ी देर के बाद ही भय ने कैदियों पर कब्जा कर लिया और नये रिक्रूट मिलने बन्द हो गये। मुल्तान कैदियों का एक रिक्रूटिंग सैण्टर था। जब महीने–महीने के बाद 'और चाहिए, और चाहिए' की मांग आने लगी, तो कुदरतन कैदियों ने समझा कि पिछले मर चुके हैं। अब हमें मरने के लिए भेजना चाहते हैं। बेफायदा ही जेल के अफसरों ने बसरे गये हुए कैदियों के राजी–खुशी के पत्र हर एक को सुनाये। जाने वाले कैदियों को और रिक्रूट देने वाले कैदियों और मुलाजिमों को तरह–तरह के लालच व्यर्थ ही दिखलाये गये, परन्तु फिर भी नये रिक्रूट काफ़ी तादाद में न पैदा हुए। आखिर दारोगा ने एक पड़ोसी कैदी को– जिसका आम कैदियों पर काफी रोब था– मोल ले लिया। साहिब और दारोगा उसको साथ लेकर जगह–जगह जाते और कैदियों को बतलाते 'देखो, तुम्हारा हैड मुन्शी भी जाता है, तुम क्यों नहीं जाते?' इस तरह तकरीबन सौ कैदी भरती हुए। परन्तु जाते समय ये कैदी भी रोने–पीटने लगे, क्योंकि पहले तो यह कहा गया कि मुन्शी को दूसरे बैच के साथ भेजा जायेगा। फिर अन्त में डॉक्टर ने उसे जाने के 'अयोग्य' करार दे दिया। ऐसा ढंग एक बार ही चल सकता है और यह एक बार के बाद ही खतम हो गया। अब तो साहिब ने निराश होकर बलप्रयोग आरंभ किया। जो कैदी किसी प्रकार की शिकायत करता या प्रार्थना करता, उससे कहा जाता, ''हम नहीं सुनते–तुम बसरे क्यों नहीं जाते?'' जब इन शब्दों का भी कोई विशेष परिणाम न हुआ, तो एक परेड करवा कर उन मोटे–ताजे कैदियों की लिस्ट तैयार की गई, जो कैद बगैरह के लिहाज़ से बसरे जाने के योग्य थे। इन लोगों को चक्की, बंबा और मंजु पर भेज दिया गया कि जब तक ये लोग अपने आप को भरती न करवायेंगे, इनको इन सख्त कामों से मत हटाया जाय। इससे साहिब को कुछ कामयाबी हुई, पर जेल में अशान्ति और हलचल मच गई। ईश्वर की कृपा से शीघ्र ही आरमिस्टिर (संधि) होकर लड़ाई बन्द हो गयी, नहीं तो न जाने इस बलप्रयोग का क्या परिणाम होता? जब कभी साहिब कैदियों को भरती के लिए बार–बार तंग करते, तो कोई दिल–जले कह देते– ''साहिब, इस तरह तंग क्यों हो? हम कैदी हैं, तुम्हारा क्या कर सकते हैं? बेड़ी लगाकर बसरे चालान क्यों नहीं कर देते?'' परन्तु साहिब ऐसा न करते थे। क्यों ? मै अभी तक निश्चित नहीं कर सका। साहिब भरती करने से पहले कैदी के मुँह से एक बार तो हाँ ज़रूर करवाते थे, चाहे उपदेश से करवाते अथवा बलप्रयोग से। परन्तु जब उसने एक बार 'हाँ' कर दी, तो सौ बार भी 'न' क्यों न करे, उसे अवश्य ही भेज देते थे। इन दो असूलों के अंदर क्या बारीक भेद है, सो तो मैं समझ सका। इसलिए इसे पाठकों के हल करने के लिए छोड़ देता हूँ।

मैंने ऊपर लिखा है कि इस बल–प्रयोग का कोई बुरा असर जेल में प्रकट नहीं हुआ। परन्तु इस प्रकार की भरती का जो परिणाम प्रांत में हुआ, उस परिणाम से उत्पन्न मार्शल–लॉ का असर जेल पर वहाँ की गणना बढ़ जाने की शक्ल में अवश्य हुआ। जब मार्शल–लॉ के कैदियों का पहला बैच जेल में आया, तो साहिब ने उन्हें कहा– ''अब गाँधी की 'जय' क्यों नहीं कहते? अब बतलाओ, सरकार की जय हुई या गाँधी की?'' ऐसे दो–चार कटाक्षों को छोड़कर उनके साथ कोई विशेष बुरा व्यवहार नहीं किया गया। केवल लाला लब्भूराम और मौलवी अब्दुल हयी को नेता समझ कर कुछ धमकाया गया और एक–एक महीना चक्की में रखा गया। परन्तु शीघ्र ही इन दोनों आदमियों के लिए उस व्यवहार की मंजूरी हो गयी, जो दूसरे देशों में सब पोलिटिकल कैदियों से और इस देश में केवल यूरोपियन कैदियों से किया जाता है। मार्शल–लॉ के कैदियों के संबन्ध में केवल एक घटना यहाँ उद्धृत करने योग्य है। राजाराम एक गुजरात का कैदी था। यह शख्स नास्तिक और कमज़ोर–दिल था। यद्यपि इसे किसी खास किस्म की तकलीफ न थी, तो भी यह अकसर निराशा से भरी हुई बातें किया करता था। जब पहली अपील में उसकी कैद 20 से दस वर्ष रह गयी, तो ऐसा प्रतीत होता है, उसने अपने आप को इन बन्धनों से मुक्त करने का निश्चय कर लिया। निराशा की बातें सुन कर मैंने उसे कई बार समझाया कि तुम लोग सब रिहा हो जाओगे अथवा अधिक से अधिक यहाँ एक–दो साल रहोगे, परन्तु उसके मन पर किसी बात ने असर न किया। नितांत एक रात उसने अफ़ीम खा कर अपने आपको सांसारिक बंधनों से मुक्त कर लिया। हम दोनों एक ही बारक में रहते थे। रात के समय जब पहरेदार ने मुझे पढ़ा–लिखा जानकर मेरा ध्यान एक ऐसे आदमी की ओर आकर्षित किया, जो बेहोशी की अवस्था में गुर्रा रहा था, तो मैंने देखा कि राजाराम बेहोश पड़ा है। एक दो इलामत देखने से जाहिर हो गया कि यह कोई ज़हर का केस है। नम्बरदार ने झट डॉक्टर को रिपोर्ट भेज दी। परन्तु नरम–नरम चारपाई से उठकर कौन एकदम आता है– फिर वहाँ, जहाँ मरीज़ एक कैदी हो। डॉक्टर के आने में एक से अधिक घंटा व्यतीत हो गया। बीमार की हालत बदतर हो गयी। आखिर बारक खोलकर बीमार को अस्पताल ले जाया गया। वहाँ उसका जो कुछ इलाज़ हुआ, वह तो खुदा ही जानता है, पर जब मैं सुबह उसे देखने गया, तो वह अस्पताल के बाहर ज़मीन पर अकेला ही पड़ा हुआ था। न तो उसके पास कोई डॉक्टर ही था और न ही कोई कैदी–कम्पाउंडर। केवल एक कैदी उसके निकट बैठा हुआ था। रात के डॉक्टर की नौकरी खत्म हो गई। सुबह अस्पताल का दूसरा डॉक्टर आया, उसने उसे चारपाई पर लिटा कर इलाज शुरू किया। एक अफ़ीम का बीमार हो और उसको आराम से लेटने दिया जाय? मैं तो रात के डॉक्टर की डॉक्टरी को न समझ सका। पर मुश्किल तो यह थी कि कुछ कहे भी न बनता था। अब दो–तीन आदमी उसको हिलाने के लिए लगाये गये और दवाइयाँ दी गयी। परन्तु वह इलाज़ के क्षेत्र से पार हो चुका था। एक बार उसने आँखे खोली और मुझे अपने निकट खड़ा देखकर 'नमस्ते' कहने का प्रयत्न किया– यह उड़ती हुई जीवात्मा की एक अंतिम चेष्टा थी। यदि डॉक्टर समय पर आ जाता, यदि उसका कोई सम्बन्धी उसकी सेवा के लिए उसके निकट होता, यदि डॉक्टर उसे अपना भाई समझ कर उसका इलाज करता, यदि ..यदियों का भी इस संसार में कुछ ठिकाना नहीं, यदि यह 'यदि' न होती, तो मालूम नहीं, क्या हो जाता?

इस घटना ने मार्शल–लॉ के कैदियों को थोड़े समय के लिए तंग कर दिया। हर एक आदमी उन पर अविश्वास करने लग गया। शीघ्र ही दूसरों के साथ राजाराम की कैद दो साल रह जाने का हुक्म आ गया– परन्तु वह तो अब सब हुक्मों से परे जा चुका था। 1919 जुलाई में युद्ध–विराम के उपलक्ष्य में कैदियों को रिहा करने की चर्चा उठी। कुल दस फीसदी कैदी रिहा किये जाने थे और शेष को एक वर्ष के पीछे एक महीना रिहाई मिलनी थी। नियत दिन आया और गुजर गया। मुल्तान कि डिप्टी कमिश्नर ने तकरीबन 5 फीसदी कैदी ही हरहा किये। इसी सम्बन्ध में मुझे भी सात महीने की रिहाई मिल गयी और मेरे पुनर्जन्म की तिथि 6 दिसम्बर, 1919 नियत हो गयी।

देहली बम रहस्योद्घाटन से साभार

☞ पृष्ठ 05 का शेष

पाथेय

पड़े। अगला पड़ाव आया। ताँगे वाला कहता है सेठ जी पुराने ताँगे पर आप अच्छे नहीं लगते, कहो तो ताँगा पेन्ट करवा दूँ। सेठ जी ने पैसे दिए और कहा पेन्ट करवा लो। दो दिन में पेन्ट हो गया पर पेन्ट गीला था, इतने में बारिश शुरू हो गई। पेन्ट सूखने में 10 दिन लग गए परन्तु बारिश रुकी नहीं। ताँगेवाला कहता है बारिश बहुत है, ठंड भी हो गई, कही ऐसा न हो मेरा घोड़ा या आप बीमार हो जाएँ, एक छोटा सा घर बनवा दूँ। सेठ जी ने कहा बनवा दो। घर बन गया लगभग 25–30 दिन वहाँ रहना पड़ा बारिशें रुकी तो सेठ ने कहा कल प्रातः यहाँ से चलेंगे। रात्रि को सो गए रात्रि में भारी हिमपात हो गया। सेठ जी अब न आगे जा सकते हैं न पीछे।

ऐसा न हो कि हम दुनिया के झमेलों में ही फँसे रह जाएँ और हमारे जीवन पर हिमपात हो जाए। इसलिए हम समय–समय पर अपने जीवन का इंट्रोस्पैकशन (Introspection) करते रहें कि हम कहाँ पर खड़े हैं और जाना कहाँ है। हम कितना आगे बढ़ रहे हैं, कहीं पीछे तो नहीं हट रहे। हम पाप रहित बन्धनरहित होकर स्वतन्त्रता व मुक्ति के लिए प्रभु के नियमों का पालन कर रहे हैं या नहीं। यदि नहीं तो पाथेय यानी रास्ते का भोजन इसी जन्म में तैयार कर लें, खा लें ताकि अगला जन्म अच्छा मिले या जन्ममरण के चक्र से मुक्ति मिल जाए। ओ३म् शांति ....

मन्त्री, आर्य समाज, मॉडल टाऊन
यमुना नगर
मो. 94164–46305

हमारा बनानेवाला

● गंगा प्रसाद उपाध्याय

गतांक से आगे ...

परमाणुओं के स्वभाव से सृजन नहीं

अब रहा स्वभाव का प्रश्न! यदि परमाणुओं में स्वयं मिलकर वस्तु बनाने का स्वभाव होता तो मनुष्य या अन्य प्राणियों को किसी चीज के बनाने की जरूरत न पड़ती। जो परमाणु अपने स्वभाव से ही वृक्ष बना सकते थे, उन्हीं परमाणुओं से उसी स्वभाव की प्रेरणा से मेज़, सन्दूक और कुर्सी भी बन सकती थी। जिन परमाणुओं से स्वभाव द्वारा पहाड़ बनते हैं उनसे मकान भी बनने चाहिए थे। क्योंकि यह तो मानना पड़ेगा कि जिन परमाणुओं से मेज़ बनी है वह उन परमाणुओं के स्वभाव के विरुद्ध नहीं बनी। यदि मेज़ का बनना उन परमाणुओं के विरुद्ध होता तो कोई बढ़ई भी वृक्ष से मेज़ न बना सकता। चूने को हल्दी में मिलाने से रोरी बनती है, परन्तु चूने का यह स्वभाव नहीं कि वह स्वयं आकर हल्दी से मिल सके। इनको परस्पर इकट्ठा करने की जरूरत होती है। संसार में देखा जाता है कि कभी पानी ऐसी वस्तुओं के संसर्ग में आ जाता है कि उसके दोनों भाग अर्थात् ऑक्सीजन (Oxygen) और हाइड्रोजन (Hydrogan) अलग–अलग हो जाते हैं और कभी भिन्न–भिन्न पदार्थ आपस में मिल जाते हैं जिनका हाइड्रोजन और ऑक्सीजन मिलकर पानी बन जाता है। इन पदार्थों का परस्पर संसर्ग स्वयं नहीं होता। इसके लिए कोई निमित्त चाहिए। कभी इस निमित्त को हम देख सकते हैं जैसे प्रयोगशाला (Laboratory) में प्रयोग करनेवाला (Expeimenter) और कभी नहीं देख सकते। यदि प्रयोगशाला में रखी हुई वस्तुएँ स्वयं स्वभाव से नहीं मिल जाती, न अलग हो जाती है तो सृष्टि के अन्य स्थानों में वे कैसे स्वयं मिल गई होंगी? फिर देखना चाहिए कि स्वभाव क्या है? यदि कहो कि परमाणुओं में रहनेवाली उस अदृष्ट शक्ति को स्वभाव कहते हैं जिनसे प्रेरित होकर परमाणु आपस से मिलते हैं तो ऐसी शक्ति के अस्तित्व की सिद्धि नहीं होती। क्योंकि जो परमाणु एक स्थान पर मिलते हैं वे दूसरे स्थान पर अलग भी होते हैं। यदि मिलना स्वभाव है तो वियोग नहीं होना चाहिए था। यदि वियोग होना स्वभाव होता तो मिलना नहीं चाहिए था। परमाणुओं में न तो परस्पर मिलने का स्वभाव है, न अलग होने का। उनमें ऐसे गुण तो अवश्य हैं कि यदि कोई उनको मिला दे तो एक विशेष वस्तु बन जाय; जैसे चूना और हल्दी ही के मिलने से रोरी बनती है, चूने में दही मिलाने से रोरी न बनेगी। परन्तु न तो चूना हल्दी से स्वयं मिलेगा न हल्दी चूने से। इनका मिलानेवाला कोई दूसरा ही होगा।

हम पहले कह चुके हैं कि संसार के सभी कार्यों में केवल दो भाग हो सकते हैं – एक वे जिनका बनानेवाला नास्तिकों और आस्तिकों दोनों को स्वीकार है, जैसे मेज़, कुर्सी आदि; दूसरे वे जिनमें मतभेद है। इनके अतिरिक्त तीसरा कोई भाग ही नहीं। यहाँ तर्कशास्त्र के अनुसार पहले प्रकार के कार्य तो 'दृष्टान्त' कोटि में आ सकते हैं, दूसरे नहीं। क्योंकि यह नियम है कि –

लौकिक परीक्षकाणां यस्मिन्नर्थे बुद्धिसाम्यं स दृष्टान्तः।

(न्याय दर्शन 1/25)

दृष्टान्त वही हो सकता है जिसको दोनों पक्ष वाले स्वीकार कर सकते हैं। यदि पहले प्रकार के कार्यों को दृष्टान्त माना जाए तो दूसरे प्रकार के कार्यों के लिए भी जोकि साध्य कोटि में हैं, एक निर्माता मानना पड़ेगा। 'साध्य कोटि' के किसी कार्य को दृष्टान्त नहीं माना जा सकता, क्योंकि वे साध्य कोटि में हैं। इनसे बाहर ऐसा कोई कार्य नहीं मिलता जो बिना कर्त्ता के हो सके। इसलिए सिद्ध है कि सृष्टि का बनानेवाला कोई है अवश्य, इसी को हम लोग ईश्वर कहते हैं।

आक्षेप – ईश्वर की सिद्धि किसी प्रमाण से नहीं होती, प्रत्यक्ष तो ईश्वर है नहीं। इसको आस्तिक भी मानते हैं। किसी ने ईश्वर को सूर्य या चाँद बनाते नहीं देखा। जब प्रत्यक्ष नहीं तो अनुमान, उपमान, शब्द आदि भी नहीं घट सकते, क्योंकि इन सबका आश्रय प्रत्यक्ष पर है।

उत्तर – यह युक्ति ठीक नहीं। यहाँ दो बातें याद रखनी चाहिएँ। पहली तो यह कि कार्यविशेष को देखकर कारणविशेष का उसी समय अनुमान करते हैं जब उस कारण से कार्य होना पहले प्रत्यक्ष हो चुका हो। दूसरी यह कि अनुमान–प्रमाण का प्रयोग वहीं होता है जहाँ प्रत्यक्ष–प्रमाण का प्रयोग न हो सकता हो। आक्षेप करनेवाले ने दूसरी बात पर ध्यान नहीं दिया। यदि संसार की सभी वस्तुएँ प्रत्यक्ष हुआ करती तो अनुमान आदि को आवश्यकता न पड़ती और केवल प्रत्यक्ष ही प्रमाण होता। कल्पना कीजिए कि एक बालक है। उसके माता–पिता को जनते नहीं देखा। अनुमान–प्रमाण से यह परिणाम निकलता है कि उसके कोई–न–कोई माँ–बाप अवश्य होंगे, क्योंकि इस बात का प्रत्यक्ष हो चुका है कि माँ–बाप द्वारा ही बालक की उत्पत्ति होती है, बिना इनके नहीं। यदि यह प्रत्यक्ष न होता तो अनुमान लगा सकते और यदि इस बालक के माता–पिता का प्रत्यक्ष होता, तो भी अनुमान न लगाते। इसी प्रकार यह तो प्रत्यक्ष हो चुका है कि बिना निमित्त के कार्य नहीं होता। सूर्य, चाँद, पृथिवी, मनुष्य का शरीर आदि कार्य हैं, अतः यही अनुमान होता है कि इनका निमित्त भी कोई है। ऐसा अनुमान न करने में उक्त दोष कदापि नहीं आ सकता।

प्रश्न – बढ़ई को तो मेज़ बनाते देखते हैं परन्तु ईश्वर को पर्वत या नदी बनाते नहीं देखते, फिर कैसे मान लें?

उत्तर – हम ऊपर कह चुके हैं कि अनुमान–प्रमाण है ही उन अवस्थाओं के लिए जहाँ प्रत्यक्ष नहीं होता। इसलिए अनुमान–प्रमाण से ईश्वर को मान लो। कभी–कभी तो बढ़ई को भी देखते, फिर भी उसका अनुमान कर लेते हो। ईंजन के भीतर बैठे हुए ड्राइवर को नहीं देखते, तो भी इंजन के चलने और गाड़ियों के खींचने से ड्राइवर का अनुमान कर लेते हैं। इसी प्रकार जब हम समस्त सृष्टिरूपी ईंजन की गति का प्रत्येक देश और प्रत्येक काल में प्रत्यक्ष करते हैं तो उस ड्राइवर के मानते में क्या दोष आता है जिसके द्वारा यह गति हो रही है?

सृष्टि से स्रष्टा का ज्ञान

प्रश्न – अच्छा यदि मान लें कि सृष्टि को बनानेवाली कोई अदृष्ट संज्ञा है तो इसके अन्य गुणों का कैसे पता चलाते हो?

उत्तर – सृष्टि को देखकर। पुस्तक को देखकर पुस्तक के रचयिता की योग्यता मालूम होती है। कल को देखकर कल के बनानेवाले के गुण मालूम होते हैं। इसी प्रकार सृष्टि को देखकर सृष्टिकर्ता के गुण मालूम होते हैं। (1) समस्त सृष्टि में नियमों की एकता मालूम होती है, इसलिए सृष्टि का नियन्ता एक ही है, अनेक नहीं। (2) सृष्टि बहुत बड़ी है, इसलिए ईश्वर भी महान् है। (3) सृष्टि स्थल से स्थल और सूक्ष्म से सूक्ष्म है, इसलिए ईश्वर सूक्ष्मतम सृष्टि से भी सूक्ष्म और इसलिए निराकार है। (4) सृष्टि ज्ञान से परिपूर्ण है, इसलिए ईश्वर सर्वज्ञ है। (5) सृष्टि प्राणियों के हित के लिए है, इसलिए ईश्वर हितकारी है।

जीव की स्वतन्त्रता ही उन्नति का कारण

प्रश्न – ईश्वर ने हमको अज्ञानी क्यो बनाया? वह हमें इन वस्तुओं का दुरुपयोग क्यों करने देता है?

उत्तर – ईश्वर दुरुपयोग नहीं कराता, हम स्वयं दुरुपयोग करते हैं। ईश्वर ने हमको स्वतन्त्र छोड़ा हुआ है।

प्रश्न – ईश्वर ने हमको स्वतन्त्र क्यों छोड़ा है?

उत्तर – हमारी उन्नति इसी में है कि हम स्वतन्त्र रहें। यदि हर एक बात में हम परतन्त्र हों तो हमको सुख भी किस बात का मिलेगा? जो अध्यापक प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अपने शिष्यों को स्वयं ही लिखवा देता है, वह उनकी प्रशंसा भी क्या करेगा? क्योंकि इसका यश अध्यापक को है, न कि शिष्यों को। शिष्य तभी यशस्वी हो सकते हैं जब उनको उत्तर लिखने में स्वतन्त्रता हो और वे अपनी बुद्धि लगा सकें। यदि जीवों को स्वतन्त्रता न दी जाए तो प्रत्येक काम ईश्वर की प्रेरणा से होगा और जीव जड़ पदार्थों के समान निर्जीववत् हो जाएँगे। क्या तुम ऐसी अवस्था को पसन्द करोगे? कदापि नहीं।

प्रश्न – सान्त अर्थात् अंतवाली सृष्टि को देखकर अनन्त ईश्वर का अनुमान क्यों करते हो?

उत्तर– अनन्त उसको कहते है जिसका अंत न हो। कारण सदा कार्य से महान् होता है। जिसने घड़ी बनाई है उसकी बुद्धि उस वृद्धि से कहीं अधिक होगी जो घड़ी बनाने के लिए चाहिए। हम सृष्टि के छोटे–छोटे भागों को तो देख सकते हैं, परन्तु समस्त सृष्टि को नहीं। इसलिए सृष्टि हमारे लिए बहुत बड़ी है। ईश्वर सृष्टि से भी बड़ा होने से अनन्त है।

ईश्वर सर्वव्यापक ही होना चाहिए

प्रश्न – जैसे घड़ी बनानेवाला घड़ी से बाहर होता है, उसमें व्यापक नहीं होता, इसी प्रकार ईश्वर को भी सृष्टि से अलग होना चाहिए।

उत्तर – क्रिया वहीं हो सकती है जहाँ कर्त्ता हो। घड़ी बनाने का अर्थ यह है कि कुछ पुर्ज़ों को लेकर आपस में एक नियम से जोड़ देना। 'जोड़ने' रूपी क्रिया के समय घड़ीसाज घड़ी के पास होता है। घड़ीसाज घड़ी के केवल एक अंश का बनानेवाला है और उस अंश तक उसका घड़ी का साथ है। घड़ी के पुर्जे जिस लोहे के बने हैं, उस लोहे के परमाणुओं को विशेष नियम से रखना घड़ीसाज का काम नहीं। इसलिए उस काम के लिए घड़ीसाज को घड़ी के पास रहने की जरूरत नहीं। परन्तु ईश्वर की सृष्टि में क्रियाएँ निरन्तर होती रहती हैं – कहीं संयोगरूपी, कहीं वियोगरूपी और कहीं दोनों तरह की। इसलिए ईश्वर भी उन क्रियाओं के साथ होने से सर्वव्यापक है, जैसे जाला तानने और सिकोड़नेवाली मकड़ी अपने शरीर में व्यापक रहती है। इसी प्रकार ईश्वर है। घड़ी में वस्तुतः दो प्रकार की क्रियाएँ हैं, एक वे जो धातु अर्थात् लोहे के परमाणुओं से संबंध रखती हैं और दूसरी पुर्ज़ों से। पुर्जे की क्रिया का सम्बन्ध घड़ीसाज से है और लोहे के परमाणुओं की क्रियाओं को ईश्वर से। यदि लोहे के परमाणु नियमविशेष से कार्य करना छोड़ दें तो पुर्ज़ों के ठीक होते हुए भी घड़ी न चले। वस्तुतः घड़ीसाज की घड़ी उन क्रियाओं के जोर पर चलती है जो ईश्वर द्वारा निरन्तर हुआ करती है। जब ईश्वर की क्रियाएँ प्रत्येक देश और काल में निरन्तर होती रहती हैं तो ईश्वर को सर्वव्यापक ही होना चाहिए।

प्रश्न – बहुत लोग ईश्वर को निष्क्रिय अर्थात् क्रिया–रहित मानते हैं और बहुत–से कहते हैं कि ईश्वर के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। ये परस्पर विरुद्ध बातें हैं। कौन–सी ठीक है और कौन–सी गलत?

उत्तर – दोनों गलत हैं। ईश्वर को निष्क्रिय मानना ईश्वर के अस्तित्व का निषेध करना है, क्योंकि ईश्वर के कामों से ही तो हम ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करते हैं। निष्क्रिय ईश्वर को न कर्त्ता कह सकते हैं न कर्मों में जो कुछ होता है वह सब ईश्वर ही करता है। क्योंकि मनुष्य तथा अन्य प्राणी भी बहुत–से काम करते हैं, जैसे ईश्वर मेज़ नहीं बनाता, न ईश्वर झूठ बोलता या चोरी करता है। जीव जीव के काम करता है, ईश्वर ईश्वर के।

प्रश्न – ईश्वर को न मानने से क्या हानि है?

उत्तर – एक तो अज्ञान। जो वस्तु है, उसका न मानना मूर्खता है। दूसरे, ईश्वर का चिंतन करने से मनुष्य पापों से बचा रहता है। तीसरे, ईश्वर को सर्वव्यापक मानने से जीव निर्भय और आनन्दमय रहता है। अतः ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए।

गंगा ज्ञान–सागर से साभार
प्रस्तुति : प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

अपने साधु-संन्यासियों की पवित्रता हेतु स्वामिनारायण सम्प्रदाय के महानुभावों की चिन्ता

● भावेश मेरजा

दिव्य भास्कर (गुजराती दैनिक, अहमदाबाद आवृत्ति) के दि. 12.7.18 के अंक के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित समाचार में लिखा गया था कि नैरोबी (केन्या) और लन्दन के स्टैनमोर मन्दिरों के अध्यक्षों ने भुज (कच्छ, गुजरात) के स्वामिनारायण मन्दिर के साधु-सन्तों और ट्रस्टी मण्डल को एक पत्र लिखकर स्वामिनारायण सम्प्रदाय के साधुओं के मोबाइल, लेपटोप, आइपेड आदि को जब्त करने को कहा है।

ध्यातव्य है कि पिछले दिनों भुज के स्वामिनारायण मन्दिर के कुछ साधुओं को लेकर विवाद पैदा हुआ था।

उक्त पत्र में साधुओं को अपने पास मोबाइल, लेपटोप, आइपेड आदि नहीं रखने का परामर्श दिया है और लिखा है कि यदि किसी साधु के पास ये चीज़ें हैं तो उनको तत्काल जब्त कर लेनी चाहिए। पत्र में यह भी लिखा गया है कि जब साधु लोग प्रवास में होते हैं तब आवश्यकता पड़ने पर वे अपने ड्राइवर तथा अनुयायियों से मांगकर इन वस्तुओं का प्रयोग कर सकते हैं।

नैरोबी के ट्रस्टियों के द्वारा लिखे गए पत्र में कुछ सन्तों द्वारा देर रात्रि में आयोजित की जाने वाली सभाओं पर भी टिप्पणी की है, जिसमें पुरुषें तथा महिलाएँ साथ में सम्मिलित होते हैं। इन ट्रस्टियों ने चिन्ता व्यक्त की है कि ऐसी रात्रि सभाओं से नियम-धर्म (आचार-धर्म) को संकट हो सकता है। इस दृष्टि से उन्होंने रात्रि सभाओं को बन्द करने का सुझाव दिया है। उनका मन्तव्य है कि स्मार्ट मोबाइल फोन का प्रयोग सन्तों, पार्षदों तथा सांख्ययोगी (विरक्त आश्रमस्थ) बहिनों के लिए अपने नियम-धर्म (आचार-धर्म) के पालन करने में विघ्न रूप बन सकता है।

इसी सम्प्रदाय के कुमकुम मन्दिर के एक सन्त ने सम्प्रदाय के सन्तों द्वारा किए जा रहे मोबाइल, लेपटोप आदि के प्रयोग को उचित तथा आधुनिक युग के अनुरूप बताया है। उनका कहना है कि किसी एक स्थान पर कुछ अप्रिय हो जाता है तो इसके कारण सब को बदनाम नहीं करना चाहिए।

साभारः दिव्य भास्कर, 12.7.18, अहमदाबाद आवृत्ति। गुजराती से हिन्दी अनुवाद : प्रस्तुति भावेश मेरजा

☞ पृष्ठ 03 का शेष

यज्ञ रूप प्रभु हमारे

सदाचार, पशुपालन विघा, गणित, कृषि विज्ञान आदि अनेक अर्थ दर्शाए हैं।

यज् धात्वर्थ – यज् धातु का पहला अर्थ देवपूजा है। देव शब्द का सबसे अधिक प्रयोग परमात्मा के लिए हुआ है। वह प्रकाश आदि का जहाँ देने वाला है, वहाँ अपने कार्यों प्रभावों, गुणों से अनोखा भी है और वही सबसे अधिक पूज्य, मान्य, उपासनीय भी है। अतः सबसे बड़ा, जग को चमकाने, चलाने, देने वाला = देव परमात्मा ही है।

अतः यज्ञ शब्द का एक अर्थ ईश्वर भी है। तभी वेद का यह कहना चरितार्थ हो सकता है कि – **अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः** – (अ. 9,10,14) इस सारे उत्पन्न हुए। होने वाले प्राकृतिक जगत का नाभि (=धारक, पोषक), केन्द्र, मूलस्रोत यह यज्ञ वाच्य ही है। ईश्वर को मानने वाले सभी यह स्वीकार करते हैं कि **'जन्माघस्य यतः'** (वेदान्त 1,1,2) अर्थात् दुनिया बनाना और बनाके चलाना बस उसी का काम है। मूलतः इस मन्त्र में उत्पत्ति के केन्द्र को यज्ञ कहा जा रहा है। बहुत सारे श्रद्धावश इस मन्त्र को अग्निहोत्र नामक यज्ञ अर्थ में लेते हैं, पर यह देवयज्ञ भुवन का नाभि (धारक, पोषक) नहीं हो सकता है। पूर्व प्रतिपादित ईश्वर भी यज्ञ का वाच्य है, इसका पोषक यह विचार भी हो सकता है अर्थात् यज्ञ का एक अर्थ परमात्मा मानने पर ही – **तस्माद् यज्ञात्सर्वहुतः** – य. 31,7, ऋ. 10,90,9, अ. 19,6,13 में वेदों का प्रादुर्भाव जिस यज्ञ से कहा है। वह यज्ञ केवल परमात्मा ही हो सकता है, क्योंकि अन्यत्र वेद (**प्र नूनं ब्रह्मणस्पति मन्त्रं वदत्युक्थ्यम्**। ऋ. 1,40,5, य. 34,57 **अपूर्वेणेषिता वाचः** – अ. 10,8,33, **स पर्यगात् – – याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात** – य. 40,8 **बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं** – ऋ. 10,71,1, **देवस्य पश्य काव्यम्** अ. 10,8,32, **यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः** य. 22,2 **स्तुता मया वरदा वेदमाता** अ. 19,71,1 **यस्मादृचोऽपातदान्** – अ. 10,7,20, **शास्त्रयोनित्वात् वेदान्त** 1,1, 3, **ब्रह्म-अक्षर समुद्भवम्** गीता 3,15) में तथा अन्य भारतीय साहित्य में वेद को ईश्वरीय ज्ञान के रूप में प्रतिपादित किया गया है, साधा गया है। अतः यज्ञ शब्द का सबसे प्रमुख अर्थ, वाच्य परमात्मा भी है। इसी दृष्टिकोण से यह गाया जाता है – यज्ञ रूप प्रभु हमारे – इसके साथ रूप शब्द तुल्य अर्थ में लेने पर अग्निहोत्रात्मक यज्ञ की तरह प्रभु ही सबसे अधिक सुगन्धि, भलाई आदि का कर्ता है।

यज्ञ का एक और अर्थ पुरुष, जीव, जीवन भी है। इसीलिए उपनिषद् के ऋषि ने कहा है – **पुरुषो वाव यज्ञः** 3,16,1 यहाँ हमारे पूरे रूप, जीवन को यज्ञ नाम दिया गया है। सत्यार्थ प्रकाश में इस उद्धरण का अर्थ करते हुए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं – जो पुरुष अन्न समय देह और पुरि अर्थात् देह में शयन करने वाला जीवात्मा यज्ञ अर्थात् अतीव शुभगुणों से संगत और सत्कर्तव्य है – सत्यार्थ प्रकाश, तृतीय समु. 3, पृ. 46

जीवन के प्रथमकाल वाले को वेद ब्रह्मचारी नाम से पुकारते हैं अर्थात् विद्यार्थी के लिए वेद में ब्रह्मचारी शब्द आया है। यह शब्द बहुत ही स्वारस्य पूर्ण है, क्योंकि इससे जहाँ उसकी दिनचर्या, जीवनचर्या, साधना का संकेत, सामने आता है, वहाँ उसके जीवन के लक्ष्य का भी निर्देश प्राप्त होता है। ब्रह्मचारी शब्द ब्रह्म और चारी (चर+दून) का मेल है। ब्रह्म शब्द परमात्मा, वेद, वीर्य आदि के अर्थ में आता है, क्योंकि ब्रह्म का सामान्य अर्थ है– बड़ा और परमात्मा जहाँ प्रत्येक प्रकार से महान है, वहाँ वेद = ज्ञान भी बड़ी वस्तु है, यतोहि वेद से ही सारे शास्त्रों, ज्ञानों का विकास हुआ है तथा ज्ञान से ही सर्वविध विकास, कार्य, साधना होती है। हमारे द्वारा खाए-पिए का अन्तिम परिपाक वीर्य रूप में होता है और वह शरीर, शक्ति, स्मरण का आधार होने से ब्रह्म कहलाता है। इन तीनों साधनाओं, लक्ष्यों को साधने वाले को वेद ब्रह्मचारी कहता है। जिसकी विशेष चर्चा अथर्व के ब्रह्मचर्य सूक्त (12,5) में है। वैसे अथर्व का नाम ब्रह्म भी है।

अथर्व का प्रथम मन्त्र भी – **ये त्रिषप्ताः परियन्ति, विश्वा रूपाणि बिभ्रतः। वाचस्पति र्बला तेषां, तन्वो अघ दधातु मे।।** यहाँ वाचस्पति शब्द वाणी/विद्या के स्वामी के लिए आया है। हाँ, वाणी से ही विद्या देने का कार्य अधिकतर होता है। अतः उसका स्वामी ये जो 3+7 या 3×7 हैं, जिनसे सारे रूप वाले रूपान्वित होते हैं और जो यत्र-तत्र-सर्वत्र विराजमान हैं। उनके बल, तेज, कौशल, को वह हमारे अन्दर स्थापित करे। जैसे कि हम देखते हैं – वर्णमाला के अ, इ, क, च, आदि वर्णों/ अल्फाबैट से सारे शब्द बनते हैं, आकार लेते हैं, साकार, सार्थक होते हैं। जैसे संगीत में सातों स्वरों पर ही सारे राग, गाने गाए जाते हैं।

अथर्व के ब्रह्मचर्य सूक्त, (12,5) में आता है, कि जैसे माता अपने गर्भ में हर प्रकार का संरक्षण देकर गर्भस्थ के शरीर – इन्द्रिय – अन्तःकरण – आत्मा और सिर रूपी द्यौ, उदर सम अन्तरिक्ष तथा पृथिवी सदृश पाद भाग का विकास, परिपाक, परिपोषण करती हैं। ऐसे ही शिक्षक शिष्यों के व्यवहार में आने वाली जरूरत की अधिक से अधिक वस्तु का ज्ञान देता है। जीवन के अंशों का सर्वविध विकास, पोषण, संवर्धन करता है। जिससे शिष्य प्रत्येक प्रकार से पुरुष = पूर्ण, मुकम्मल, परफैक्ट बन सके।

विशेष विषय में विशेषज्ञ बनने की इच्छा रखने वाले विद्यार्थियो! इस आयु, अवसर के स्वारस्य को सामने रखकर छान्दोग्य उपनिषद् के ऋषि ने जीवन की सफलता के मूलमन्त्र को बतलाते हुए कहा है – **बलमुपास्व** 7,8,1 अर्थात् विद्या बल तथा शरीरबल की साधना के लिए सदा प्रयत्नशील रहो। यह अवस्था स्वाभाविक रूप से स्वास्थ्य संवर्धन और ज्ञानप्राप्ति का स्वर्ण अवसर, सहयोगी सुविधा है। इस साधना में सदा निरत रहना चाहिए। अतः उत्साह, आशा के साथ इसमें ऐसे जुटो कि उसमें कभी चूक न हो।

182 शालीमार नगर,
होशियारपुर – 146001

☞ पृष्ठ 04 का शेष

महाभारत में ...

का कथन द्रष्टव्य है–

तस्मात् तडागे सद्वृक्षा रोप्याः श्रेयोऽर्थिना सदा।
पुत्रवत् परिपाल्याश्च पुत्रास्ते धर्मतः स्मृताः।।

कहने का तात्पर्य है वृक्ष धर्म की दृष्टि से पुत्र ही माने गए हैं। पर्यावरण–संरक्षण में पशु–पक्षी भी अमूल्य योगदान देते हैं। वशिष्ट मुनि ने गाय के माहात्म्य को दर्शाया है। गोधन सम्पत्ति के रूप में 'पञ्चगव्य' (दूध, दही, घृत, गोमूत्र और गोबर) का ओषधीय महत्त्व है इसकी उपयोगिता आयुर्वेदशास्त्र स्वयं सिद्ध करता है।

महाभारत के ऋषिगण विश्वकल्याण ार्थ यज्ञ–निरत हैं। भीष्मपर्व में स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं–

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।

महाभारत भीष्मपर्व गीता 3.14

यज्ञ की महत्ता इसी से व्यक्त होती है कि सृष्टि की उत्पत्ति यज्ञ से बतलाते हैं, क्योंकि प्राणी, अन्न, वर्षा परस्पर रूप से यज्ञ से सम्बद्ध हैं। किसी का अलग अस्तित्व स्वीकार्य नहीं है। प्रत्येक द्विज को चाहिए कि वह बिना किसी विचार के यज्ञ करें और करावें। जो स्वर्गदायक विधि से यज्ञ करता है, उसे देहत्याग के पश्चात् महान् स्वर्गफल की प्राप्ति होती है –

तस्माद् ब्रह्मन् यजेच्चैव याजयेच्चाविचारयन्।
यजतः स्वर्गविधिना प्रेत्य स्वर्गफलं महत्।।

महाभारत शान्तिपर्व 268.39

महाभारत में पर्यावरण–चेतना से सम्बन्धित विचारों का उल्लेख करने के पश्चात् वर्तमान सन्दर्भ में उसकी प्रासंगिकता का विचार करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। दार्शनिक क्षेत्र में 'प्रकृति' शब्द की परिव्याप्ति इतनी विस्तृत है कि उसमें जगत् के उपादानत्व का तात्त्विक कारणता के साथ–साथ मनुष्य के मनुष्येतर प्राणियों के साथ सम्बन्धों की व्याख्या, नदी, वन, पर्वत, समुद्र आदि जड़ पदार्थों के साथ उसकी निजता और सहभागिता सहज रूप से देखी जा सकती है। कला और साहित्य में इसे निसर्ग कहकर समस्त सौन्दर्यात्मक मानदण्ड के रुप में स्वीकार्य है। आज की 'पर्यावरण–चेतना' मानव द्वारा आत्मकेन्द्रित 'अस्तित्व रक्षा' के लिए उपादान रही है।

प्राकृतिक पर्यावरण में सभी कारकों को अन्योन्याश्रित बताया गया है। मानव जीवन के विकास और संरक्षण हेतु आवश्यक उपादानों की निरन्तरता तभी सम्भव है, जब 'ईशावास्योपनिषद्' के अनुसार **'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'** अर्थात् त्याग की भावना से उपभोग किया जाय। पर्यावरण–संरक्षण हमारा नैतिक कर्तव्य है। महाभारत में पर्यावरण–चेतना द्वारा पर्यावरण–संरक्षण का जो स्वरूप हमें प्राप्त होता है, वह ऐतिहासिक या तात्कालिक ही नहीं, वैज्ञानिक और शाश्वत है। देर–सबेर मानव को स्वयं को सुरक्षित एवं स्वस्थ रखने के लिए महाभारत के पर्यावरण–चेतना का आश्रय लेना ही पड़ेगा। तभी प्राकृतिक पर्यावरण और मानव दोनों की रक्षा हो सकेगी। श्रीमद्भागवत का उद्घोष भी यही है –

खं वायुमग्निं सलिलं मजीव्य ज्योतींषि
सत्त्वानि दिशो द्रुमादीन्।
सरित्समुद्रांश्च हरेः शरीरं यत्मिञ्च
भूतं प्रणमेदनन्यः।।

श्रीमद्भागवत 11.2.41

महराजगंज–भदोही 221314
अभिनन्दन भारती एवं संस्कृत वाङमय में पर्यावरण चेतना से साभार

☞ पृष्ठ 02 का शेष

यज्ञ–प्रसाद

की एक शाखा चिरकाल तक तने के साथ संयुक्त रहकर विभिन्न ऋतुओं के चक्र को, प्रतिकूल होते हुए भी सहन करती है। ग्रीष्म में सूर्य की उष्णता को, प्रावृट् में वर्षा की सतत धाराओं, शीत और शिशिर में प्रबल ठण्डी हवाओं और हिमपात को तथा बसन्त में मन्द समीर को ये शाखाएँ अपने पर झेलती हैं। पक्षियों की बीटों और चंचुओं के आघात–प्रत्याघात का और उनके घोंसलों का स्वागत करती हैं। कटने के पश्चात् फिर दोबारा वृक्ष पर जाकर जुड़ नहीं सकती। कुल्हाड़ों की चोटों को बारम्बार सहते हुए, बड़ी आकृति से छोटी आकृति में आती हुई और निरन्तर सूर्य – रश्मियों के प्रति अपनी आर्द्रता समर्पित करती हुई पवित्र यज्ञ–कुण्ड में स्थान पाने योग्य बनती हैं। कितनी दीर्घकालीन तपस्या एक समिधा को करनी पड़ती है! और इसका प्रतिफल? यज्ञाग्नि में अपने को पूर्णरूप से भस्म कर, बदले में, समूचे वायुमण्डल को सुगन्धित बना देना, कितनी हृदयग्राही शिक्षा यह समिधा देती है! हे मानव! अगर तुझे विश्व में अपने और चतुर्दिक् के जीवन को सुगन्धिमय बनाना है तो त्याग और आत्मसमर्पण का मार्ग अपना। वेद कहता है –

तेन त्यक्तेन भुंजीथाः

विश्व का उपयोग इस त्याग और समर्पण की भावना से ही हो सकता है। उपनिषदों में कहा गया है –

त्यागेनैव अमृतत्वमानशुः

त्याग से ही अमृत–पद की प्राप्ति होती है।

धर्म–पथ पर अडिग रहना

इस प्रकार समिधा त्याग और तपोमय जीवन का प्रतीक है। समिधा से एक दूसरी शिक्षा भी मिलती है। समिधा कहती है कि जिस प्रकार मैं एक बार वृक्ष से कटकर फिर दोबारा वृक्ष से जुड़ नहीं सकती, इसी प्रकार यज्ञासन पर बैठा यजमान भी निश्चय करे कि मैंने एक बार जो यज्ञमय जीवन अपना लिया है यज्ञ का अवलम्बन किया है, वह अब मुझसे छूट नहीं सकता। अब तो मैं इस मार्ग से कभी विचलित नहीं होऊँगा –

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

धीर पुरुष न्याय–संगत और धर्म–निष्ठ मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते।

संगठन और सम्मिलन की प्रतीक – सामग्री

यज्ञकुण्ड में आहुति के रूप में दिये जाने वाले होम–द्रव्यों पर विचार करें। साधारण भाषा में इसे 'सामग्री' कहते हैं। इसमें चार प्रकार के पदार्थ होते हैं। पहले – सुगन्धित, दूसरे – पुष्टिकारक, तीसरे–मिष्ट और चौथे – रोगनाशक। इन सबके उचित मात्रा में सम्मिलन, सम्मिश्रण और सहयोग से ऐसा शक्ति–सम्पन्न यज्ञ–पदार्थ तैयार होता है जो चारों ओर के वातावरण को विशुद्ध करता हुआ यजमान को बलिष्ठ, पुष्ट और निरोग बनाता है। यह सामग्री संगठन और समन्वय का सन्देश देती है। हिन्दी में कहावत है 'एक और एक ग्यारह' – एक के साथ एक संगठित हो जाने से 11 व्यक्तियों के बराबर बल का प्रादुर्भाव हो जाता है। इसी प्रकार सुगन्धित, पुष्टिकारक, मिष्ट और रोगनाशक पदार्थों के संगठन और अनुपात के साथ समन्वित करने से व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में अनुपम और अजेय शक्ति का संचार हो जाता है।

क्रमशः

वैदिक शिक्षा पद्धति का पोषक कन्या गुरुकुल, खरल–जीन्द

हरियाणा राज्य के जीन्द जिले में नरवाना तहसील के खरल ग्राम में एक कन्या गुरुकुल संचालित है। इस गुरुकुल का सम्पर्क दूरभाष नम्बर 01684–273141 है। गुरु का ईमेल kanyagurukulkharal@gmail.com है। इस गुरुकुल की स्थापना 26 जनवरी सन् 1976 को स्व. स्वामी रत्नदेव सरस्वती जी के कर कमलों से हुई। गुरुकुल का संचालन इसकी प्रबन्ध समिति **'वैदिक शिक्षण संस्थान, कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द)'** द्वारा किया जाता है। गुरुकुल अध्ययन–अध्यापन में पूर्णरूपेण गतिशील है। गुरुकुल में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी तथा भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां की पाठविधि से शिक्षा दी जाती है। गुरुकुल सरकार से स्थाई मान्यता प्राप्त है।

यह गुरुकुल अपनी निजी भूमि में स्थित है जिसका कुल क्षेत्रफल 28 एकड़ है। गुरुकुल की अचल सम्पत्तियों में विशाल छात्रावास भवन, विद्यालय भवन, भोजनालय, विशाल यज्ञशाला, विशाल बहुद्देशीय हाल वा सभा भवन, पुस्तकालय, कम्प्यूटर लैब, भौतिक विज्ञान एवं रसायन विज्ञान प्रयोगशाला, स्टाफ क्वार्टर्स, पाकशाला, गौशाला भवन और विशाल सभागार सम्मिलित हैं:

गुरुकुल में एक गौशाला है। गुरुकुल में कृषि का कार्य भी होता है। भारत के अनेक प्रान्तों की छात्राओं ने यहां शिक्षा प्राप्त की है। कुछ छात्रायें उच्च पदों पर कार्यरत हैं। स्नातक छात्राओं में से कुछ अन्य विद्यालयों में अध्यापिकायें नियुक्त हुई हैं। नेपाल की अनेक छात्रायें यहां शिक्षित होकर नेपाल में चिकित्सक नियुक्त हुई हैं। यहां की छात्राओं से हरियाणा राज्य में नारी शिक्षा का प्रचार हुआ है। गुरुकुल की आय का अपना कोई स्रोत नहीं है। सभी कार्य गुरुकुल प्रेमियों के दान व उनसे चन्दा इकट्ठा करके किये जाते हैं। राज्य सरकार से आंशिक आर्थिक सहायता प्राप्त होती है। गुरुकुल की सभी स्नातिकायें वैदिक धर्म की प्रारिकायें बन जायें तो देश एवं आर्यसमाज में क्रान्ति आ सकती है।

प्रस्तुतिः मनमोहन कुमार आर्य

पत्र/कविता

अयोध्या-विवाद बातचीत से हल करें

पूरा पिछला मास भारत–पाक मुठभेड़ में निकल गया। इस बीच हमारे सर्वोच्च न्यायालय ने तीन बड़े फैसले किए, जिनकी खबरें तो छपीं लेकिन उन पर खास ध्यान नहीं दिया गया। ये तीन फैसले क्या थे? पहला, राम मंदिर और बाबरी मस्जिद का! दूसरा, जंगलों की जमीन से खदेड़े जानवाले निवासियों का और तीसरा, अरावली के जंगलों को खत्म नहीं करने का। इन आखिरी दो फैसलों के कारण काफी मुसीबतों से लाखों लोगों को छुटकारा मिलेगा। वे लोग अदालत के आभारी होंगे लेकिन राम–मंदिर और बाबरी मस्जिद के बारे में अदालत ने जो ताजा सुझाव दिया है, उस पर सरकार और याचिकाकर्ताओं को गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। यह ठीक हैं कि पुलवामा–कांड और भारत–पाक मुठभेड़ के बाद राम मंदिर का सवाल पीछे खिसक गया है लेकिन यदि यह मुठभेड़ यहीं खत्म हो गई और हमारे मीडिया ने कुछ गड़े मुर्दे उखाड़ने शुरु कर दिए तो मानकर चलिए कि मोदी सरकार को लेने के देने पड़ सकते हैं। फिर अयोध्या–विवाद सारी राजनीति का केंद्र बिंदु बन जाएगा।

इस समय देश की जनता के सामने 'सबका साथ, सबका विकास' और तरह–तरह के अभिभाषणों की नौटंकियां लगभग निरर्थक होती जा रही हैं। रफाल का मुद्दा भी नेपथ्य में चला गया है। इसीलिए सर्वोच्च न्यायालय के इस सुझाव पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिंदू परिषद, भाजपा, कांग्रेस, समाजवादी दल और सभी याचिकाकर्ताओं को एक साथ जुट जाना चाहिए कि यदि यह मसला बातचीत से हल हो सकता हो और इसकी एक प्रतिशत भी संभावना हो तो उसे तलाशा जाना चाहिए। 1992 में नरसिंहराव सरकार और याचिकाकर्ताओं के बीच बातचीत का सिलसिला मैंने चलाया था। मेरे कहने पर विहिप ने कार–सेवा तीन माह के लिए स्थगित भी की थी लेकिन कुछ भावुक अतिवादी लोगों ने बाबरी ढांचे के साथ–साथ बातचीत का पुल भी ढहा दिया।

यदि सरकार को मुठभेड़ से कुछ फुर्सत मिले तो उसे तुरंत पहल करके दोनों पक्षों से बातचीत चलानी चाहिए। 70 एकड़ जमीन में भव्य राम मंदिर के साथ–साथ सर्वधर्म विश्व–तीर्थ के प्रस्ताव पर सभी पक्षों को राजी करना कठिन नहीं है। अयोध्या–विवाद बातचीत से हल हो सकता है।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
dr.vaidik@gmail.com

****

नववर्ष विक्रमी सम्वत् 2076 पर विशेषः

मंगलमय नूतन वर्ष हो!

सुन्दर समुज्ज्वल उत्कर्ष हो।
मंगलमय नूतन वर्ष हो।।

हृदय विस्तृत व्योम सम,
मस्तिष्क सरस सोम सम।
बुद्धि विकसित प्रबोध हो,
निःसृत चंहुदिश हर्ष हो।
मंगलमय नूतन वर्ष हो।।

अदृश्य दुरित समस्त हों,
कलुष्ति दुर्ग ध्वस्त हों।
भद्रताओं के उज्जास का,
भूतल को दिव्य स्पर्श हो।
मंगलमय नूतन वर्ष हो।।

छवि मानवता की गहन,
दानवता का शिविर दहन।
अभ्युदय हो मातृ भू का,
ऊँचा भाल अहर्निश हो।
मंलमय नूतन वर्ष हो।।

एकता मूल–मन्त्र सृजित,
उपवन का हर पुष्प मुदित।
'जीओ और जीने दो' तले,
कहीं न कोई संघर्ष हो।
मंगलमय नूतन वर्ष हो।।

महात्मा चैतन्यस्वामी
महादेव, सुन्दरनगर–175018 (हि0प्र0)
मो. 9418053092

भाव गीत

हे प्रभु दुर्गुण मेरे हर लीजिए।
जो भी शुभ हो वो कृपा कर दीजिए।।

शुभ घटित हो देव जीवन में मेरे,
शुभ उठें संकल्प इस मन में मेरे।
बुद्धि को शुभ ज्ञान का वर दीजिए।
हे प्रभु दुर्गुण मेरे हर लीजिए।।

दो प्रभु आशीष मैं ऐसा बनूँ,
शुभ करूँ शुभ ही सुनूँ शुभ ही गुनूँ।
मेरे जीवन का तमस हर लीजिए।
हे प्रभु दुर्गुण मेरे हर लीजिए।।

सर्वमंगल की लिए शुभ भावना,
हो मेरा हर कृत्य और हर कामना।
मन की वीणा को भी शुभ स्वर दीजिए।
हे प्रभु दुर्गुण मेरे हर लीजिए
जो भी शुभ हो वो कृपा कर दीजिए।।

स्वामी नित्यानन्द

वरिष्ठ नागरिक?

भारतीय रिर्जव बैक के गर्वनर महोदय से आग्रह है कि वरिष्ठ नागरिकों द्वारा बैकों में जमा धन राशि पर ब्याज दरों को ज्यादा उत्साहवर्धक कराये।

यह उल्लेखनीय है कि अधिकांश वरिष्ठ नागरिकों के आय का प्रमुख साधन बैकों में जमा धन राशि से प्राप्त ब्याज ही आय का मुख्य स्रोत होता है? दिन–प्रतिदिन बढ़ रहे खर्चों को ध्यान में रखते हुए यदि बैक ब्याज दरों को ज्यादा आर्कषक बनायें तो ज्यादा लाभान्वित हो सकेंगे। वरिष्ठ नागरिकों को 2 प्रतिशत से ज्यादा ब्याज अन्य नागरिकों की अपेक्षा ज्यादा मिलता है। हमारे देश में वरिष्ठ नागरिकों का शोषण क्यों?

कृष्ण मोहन गोयल
113 बाजार कोट
अमरोहा–244221

****

आर्य जगत् के पाठकों की सेवा में

आर्य जगत् साप्ताहिक के सुधी पाठकों को सूचित किया जाता है कि महात्मा हंसराज जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में साप्ताहिक "आर्य जगत" का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। अतः 28 अप्रैल 2019 (28 अप्रैल से 04 मई 2019) का अंक जोकि 25 अप्रैल 2019 को पोस्ट होगा, विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा।

विशेषांक प्रकाशित करने के कारण 7 अप्रैल 2019 (7 अप्रैल से 13 अप्रैल), 14 अप्रैल 2019 (14 अप्रैल से 20 अप्रैल) एवं 21 अप्रैल 2019 (21 अप्रैल से 27 अप्रैल 2019) के अंक बन्द करने का निर्णय लिया है। असुविधा के लिए खेद है।

सम्पादक

****

के.आर.एम. डी.ए.वी. कॉलेज, नकोदर में महर्षि दयानन्द जन्मदिवस व ऋषिबोधोत्सव आयोजित

के.आर.एम. डी.ए.वी. कॉलेज, नकोदर में महर्षि दयानन्द सरस्वती का 195 वाँ जन्मदिवस व ऋषिबोधोत्सव का आयोजन आर्य समाज मन्दिर, नकोदर और के.आर.एम. डी.ए.वी. कॉलेज, नकोदर के संस्कृत व हिन्दी विभाग के पारस्परिक प्रयत्नों से प्रिंसीपल डॉ. अनूप कुमार के संरक्षण में तथा श्री सोमदत्त मेहता की अध्यक्षता में किया गया। इस महोत्सव का आरम्भ प्रातःकालीन 11 कुण्डीय यज्ञ के साथ किया गया और प्रसिद्ध भजन गायिका श्रीमती रश्मि घई ने अपने मधुर भजनों द्वारा खूब समय बाँधा।

डी.ए.वी. कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. अनूप कुमार ने अपने धारा प्रवाह सम्बोधन में आर्य समाज की विचारधारा पर आधारित प्रेरणादायक प्रवचन द्वारा उपस्थिति पर गहरी छाप छोड़ी। इस समारोह में डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के सैक्रेटरी श्री अरविन्द घई मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित हुए। उन्होंने कहा कि आधुनिक समय में आर्यसमाज द्वारा दिखाए गए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ. उदयन (आचार्य, गुरु विरजानन्द स्मारक, करतारपुर) ने कहा कि एकाग्रता एवं शान्त मन से हमें आर्यसमाज के अनुसार जीवन यापन करना चाहिए। श्री सोमदत्त मेहता ने समारोह में गायत्री मन्त्र का पाठ किया और उपस्थित सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर प्रिंसिपल डॉ. अनूप कुमार ने आए हुए सभी महानुभावों का स्वागत किया।

एल.आर.एस. डी.ए.वी. अबोहर में बेबी शो का आयोजन

एल.आर.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल अबोहर में बेबी शो का सफल आयोजन विद्यालय के सभागार में किया गया। गायत्री मंत्र गायन व पवित्र वेद मंत्रों का उच्चारण कर कार्यक्रम का आगाज़ किया गया। इस अवसर पर श्रीमती चारु आहूजा मुख्यातिथि थी। इस अवसर पर प्री प्राइमरी विभाग में नए बनाए गए स्पलैश पूल व सैंड पिट का शुभारंभ भी श्रीमती आहूजा द्वारा अपने कर कमलों से किया गया। इस अवसर पर प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा, स्कूल मैनेजर डॉ. श्रीमती उर्मिल सेठी, स्कूल सुपरवाइजर श्रीमती सुनीता सहगल, प्री प्राइमरी विभाग की कॉर्डिनेटर श्रीमती तरणजीत समाघ भी उपस्थित थी।

बेबी शो संबंधी जानकारी देते हुए प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा ने बताया कि बेबी शो में विभिन्न गतिविधियों का आंकलन कर निर्णायकों द्वारा बच्चों को विजेता घोषित किया गया। शो में मोस्ट फोटोजेनिक मॉम एन्ड मी, मोस्ट फोटोजेनिक बेबी, बेस्ट ड्रेस्ड किड, बेस्ट स्माइल किड, मोस्ट एक्टिव बेबी, हैल्थी बेबी, बेस्ट डाँस, डाँस विद मॉम, पोएम रेसिटेशन, चाङ्मग प्रिंस एन्ड प्रिंसेस के खिताबों से नौ निहालों को नवाज़ा गया।

प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा ने कहा कि डी.ए.वी. स्कूल का इतिहास उपलब्धियों से भरा हुआ है। उन्होंने कहा कि एक नन्हे बालक के सर्वांगीण विकास और उसे सशक्त मानव बनाने हेतु डी.ए.वी. स्कूल के प्री प्राइमरी विभाग का कोई सानी नहीं है।

आर्य समाज से.-7, पंचकूला में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य सभा के तत्त्वाधान में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 195वें जन्मोत्सव एंव बोधोत्सव का आयोजन आर्य समाज सेक्टर 7 में बड़े धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर एक भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसमें रोपड़, चंडीगढ़, पंचकूला, मोहाली एवं डेराबस्सी के डी.ए.वी. एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा आर्य समाजों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

ट्राईसिटी झांकी प्रतियोगिता में डी.ए.वी. सूरजपुर की झांकी में **'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज'** पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया जिसमें वैदिक धरोहर संरक्षक–आर्य समाज (शुद्धि प्रचारक, ईश्वर, उपासक, ज्ञान प्रचारक, समाज सुधारक, देश उद्धारक, गुरुकुल उद्धारक, कन्या उद्धारक, नारी

उत्थान, गो रक्षा समर्थक, समता प्रचारक, स्त्री शिक्षा प्रचारक, बाल–विवाह उन्मूलक, जाति प्रथा निवारक, पर्यावरण संरक्षक, राष्ट्रवाद संरक्षक, पाखण्ड निवारक, सत्य प्रचारक, स्वाभिमान का प्रतीक, सत्यधर्म का व्याख्याता, आर्य परम्परा का प्रतिष्ठापक, स्वतंत्रता का प्रथम उद्घोषक तथा आर्य समाज–आधुनिक प्रासंगिकता) विषयों को लेकर चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया। यह झांकी शहीदों की शहादत को समर्पित थी।

पांच यज्ञों, उनकी विधि महत्व झांकी के माध्यम से प्रस्तुत किये गये। यज्ञ द्वारा स्वच्छ पर्यावरण पर विशेष रूप से झांकी में केन्द्रित किया गया। ब्रह्मचर्य तथा स्टॉफ द्वारा हाथों में ओ३म् के झंडे लिए हुए जयघोष करते हुए सर्वधर्म तथा 'मानवता' सर्वोपरि का सन्देश दिया। व्यक्तिगत आत्म कल्याण से ही विश्व कल्याण सम्भव है। प्रस्तुत झांकी भारत की सांस्कृतिक धरोहर / विरासत एवं अखण्डता का परिचायक बनी।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. **U(C)-103\2018-20**
Posted at N.D.P.S.O. ON 27/28-03-2019

डी.ए.वी. जावर माइन्स, उदयपुर में श्रद्धांजलि सभा और शान्ति यज्ञ

डी.ए.वी. हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, उच्चमाध्यमिक विद्यालय, जावर माइन्स, उदयपुर, राजस्थान में पुलवामा हमले में वीरगति प्राप्त शहीदों की आत्मा को शान्ति व सद्गति निमित्त 'श्रद्धांजलि सभा व शान्ति यज्ञ' रखा गया। यज्ञ में शान्तिमन्त्रों व वैदिक राष्ट्रप्रार्थना के मन्त्रों से आहुतियाँ दी गई। प्रधानाचार्य श्री हरबंस सिंह ठाकुर ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि – हमें राष्ट्र प्रहरी वीरों का सम्मान करना चाहिए और उनके शहादत को सदैव स्मरण रखना चाहिए। अन्त में सभी विद्यालयीय प्रधानाचार्य, अध्यापकों व छात्रों ने 'अमर जवान ज्योति' की प्रतिकृति पर पुष्प चढ़कार श्रद्धांजिल अर्पित की।

डी.बी.एन. विद्यालय अजमेर में दयानन्द जयन्ती सम्पन्न

दयानन्द बाल निकेतन विद्यालय अजमेर में आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती व बोध दिवस के उपलक्ष्य में सप्त दिवसीय कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया।

विद्यालय प्रधानाचार्य श्री नवनीत ठाकुर ने वेद मंत्रोच्चार से दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस शुभ अवसर पर वेद मंत्रो द्वारा ईश्वर की स्तुति करते हुए यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की गई। प्रधानाचार्य ने दयानन्द सरस्वती द्वारा दिये गये उपदेशों, सामाजिक बुराईयों, पाखण्डों, छुआछुत, बाल विवाह का खंडन कर उनके सदुपदेशों को आत्मासात् करने के लिए प्रेरित किया। श्रीमती अर्चना सिन्हा द्वारा समाज सुधारक दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र पर विस्तृत प्रकाश डाला गया।

साप्ताहिक कार्यक्रमों में दयानन्द सरस्वती के जीवन पर आधारित क्विज, डेक्लेमेशन, वेदमंत्रो पर शास्त्रीय नृत्य, स्लोगन प्रतियोगितओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के समापन पर मुख्य आर्कषण का केन्द्र दयानन्द सरस्वती की जीवनी पर आधारित नाटक द्वारा उनके जन्मोत्सव, शिवरात्रि पर्व पर घटित घटना, सत्य की खोज, सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन, बोध की प्राप्ति, 1875 में मुंबई में आर्य समाज की स्थापना, वेदो का प्रचार प्रसार, यज्ञ की महत्ता आदि कई प्रसंगो का भव्य व आकर्षण मंचन किया गया।

जे.एन.जे डी.ए.वी. गिदड़बाहा में वैदिक चेतना शिविर सम्पन्न

जगननाथ जैन डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गिदड़बाहा में दो दिवसीय वैदिक चेतना शिविर का शुभारम्भ वैदिक मन्त्रोच्चारण द्वारा पावन यज्ञ से हुआ, जिसमें सभी के लिए सुखद एवम मंगलमय जीवन जीने की प्रार्थना की गई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्या सुश्री मोनिका खन्ना, अध्यापकगण एवम् विद्यार्थियों ने हवनकुण्ड में आहुतियाँ देते हुए स्वास्तिवाचन के मन्त्रों का पाठ किया। इस यज्ञ के मुख्य यजमान सुश्री मोनिका खन्ना थे। कार्यक्रम के दौरान भजन, कविता, योगाभ्यास, वैदिक मन्त्र, चित्रकला प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया।

इस अवसर पर आर्यजगत् के विद्वान आचार्य श्री राजू वैज्ञानिक ने विद्यार्थियों को शुभ आशीर्वाद देते हुए अपने विचारों के माध्यम से महर्षि दयानन्द, पण्डित गुरुदत विद्यार्थियों, महात्मा हंसराज के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में उपस्थित स्थानीय समिति के चेयरमैन श्री रघुवीर सिंह, आर्य समाज गिदड़वाहा के सदस्य श्री मदन लाल भी थे। समापन समारोह के दौरान प्रधानाचार्या ने अपने शुभ विचारों से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया। विद्यार्थियों को संयम, बन्धुत्व, सहनशीलता, सद्भावना और प्रेम की भावनाओं से ओत–प्रोत करते हुए माता–पिता की सेवा करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार दिए गए और आए हुए अतिथियों को सम्मानित किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**